ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

# देवपुत्र

आश्विन २०८३ अक्टूबर २०२६

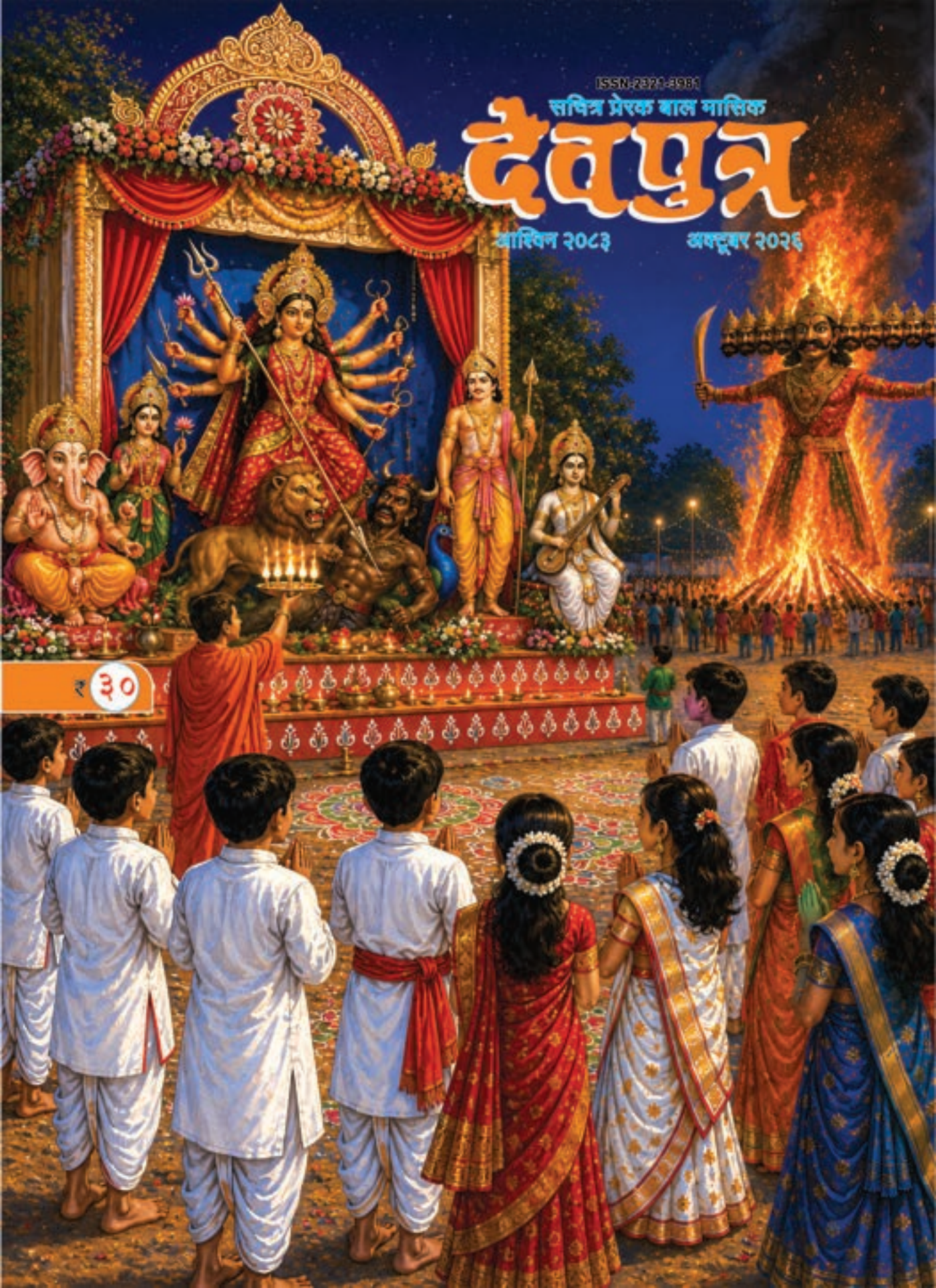

₹ ३०

कविता

# विश्वास

– अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'

विजय का मूल मंत्र है खास
अटल विश्वास, अडिग विश्वास।।
किसने नहीं सुनी राणा की
कठिन दिनों की अमर कहानी ?
हार न मानी, जंगल-जंगल
भले भटकती रही जवानी,
बनाया उसने ही इतिहास
न आई जिसे गुलामी रास।।
देख अटूट भक्ति मीरा की
बाधाएँ असहाय हो गईं,
विष अमृत बन गया और
दुर्गम राहें आसान हो गईं,
भक्ति बल होता जिसके पास
झुका देता है वह अकाश।
निडर अहर्निश चलने वाले
मंजिल अपनी पा ही जाते,
जो करते सेवा जन-जन की
सारे जग में छा ही जाते,
जगाते जो सबमें विश्वास
बना लेते हैं सबको दास।।
विजय का मूल मंत्र है खास
अटल विश्वास, अडिग विश्वास।।

–बलिया (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

# देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

आश्विन २०८३ • वर्ष ४७
अक्टूबर २०२६ • अंक ०४

संपादक
गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक
नारायण चौहान

**मूल्य**

| | | |
|---|---|---|
| एक अंक | : | ३० रुपये |
| वार्षिक | : | ३०० रुपये |
| दस वर्षीय | : | ५००० रुपये |
| सामूहिक वार्षिक | : | १८० रुपये |

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

**संपर्क**

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित।

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

## अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

इस माह हम सब वीरता का महापर्व विजयादशमी मनाएँगे। वीरता केवल शत्रु अथवा संकटों से प्रत्यक्ष संघर्ष करने तक ही सीमित भाव नहीं है। वरन् हर चुनौती का सामना करने के लिए 'असंभव' शब्द के कपाट खोलकर विजय का मार्ग बनाने और कठिन से कठिन कार्य को कर लेने के आत्मविश्वास और दृढ़ता का नाम ही वीरता है। साधनों और सुविधाओं की अनिवार्यता को पीछे छोड़ कर लक्ष्य तक निरंतर बढ़ते जाना और उसकी प्राप्ति तक न रुकना ही वीरता है।

बचपन से ही वीरता हमारा स्वभाव बन जाए तो जीवनभर सफलताएँ हमारी राह तकती प्रतीत होती हैं। एक ऐसे ही ७-८ वर्ष के छोटे बालक का सत्य प्रसंग है। एक बार उसे एक फोड़ा हो गया। फोड़ा बड़ा हो गया, पक गया। मवाद पड़ जाने से उसमें भयंकर पीड़ा हो रही थी। चिकित्सक ने कहा कि इसे चीरा लगाकर मवाद निकालना ही पड़ेगा। बालक तो निडर था पर माँ की ममता बच्चे को चीरा लगवाने की कल्पना करके ही तैयार न हुई।

कोई भी असाध्य बीमारी हो जाए तो सहते रहने की अपेक्षा आवश्यक है कि उसका उपचार कर दिया जाए चाहे वह कितना भी कठिन हो ऐसा बचपन से ही सोचने वाले इस बालक ने आधी रात को बिना एक सिसकी भी निकाले अपने हाथों ही उस फोड़े को चीरकर सारा मवाद बहा दिया। घाव पर पट्टी बाँध ली और सुबह से पिता के साथ खेत पर चल दिया। पट्टी पर खून देखा तो सबको यह बात ज्ञात हुई। लोग दाँतों तले अँगुली दबाए कहने लगे यह बालक लोहे का बना है क्या?

बड़ा होकर यही बच्चा देश का गृहमंत्री बना। भारत की स्वतंत्रता के मार्ग की बड़ी बाधा थी हमारे देश में ५६५ अलग-अलग रियासतों का होना। सब एक न हों तो एक राष्ट्र कैसे बने? सरदार बन कर इन वीर गृहमंत्री ने इन रियासतों को एक कर भारत के रूप में विलय करने का असंभव काम संभव कर दिखाया। जिन दो-तीन रियासतों ने इस राष्ट्रीय एकता में बाधा बनने की जिद की उनका उपचार भी बचपन में चीरे गए फोड़े की तरह कर दिया। इसी माह उस लौह पुरुष की जयंती भी है जिन्हें हम सरदार वल्लभभाई पटेल के नाम से जानते हैं। आओ हम भी उनके जैसा वीर भाव धारण कर विजयादशमी सार्थक करें।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

# ।। अनुक्रमणिका ।।

## कहानी


- रावण का अनोखा पुतला -देवेन्द्र राज सुथार ०५
- जिज्ञासु बालपन -पूनम सिंह 'भक्ति' ०७
- रावण और इन्द्र का युद्ध -कुमुद कुमार १४
- चिड़िया का घोसला -डॉ. प्रभा पंत ३०
- सेल्फी -नीरज कुमार मिश्रा ३२


## छोटी कहानी


- दो बातूनी -दीपांशु जैन ३९
- दुद्धा का बलिदान -इन्जी. रघुराजसिंह कर्मयोगी ४२


## आलेख


- विश्वभर में देवी पूजा -नरेन्द्र देवांगन ११


## प्रसंग


- अपनी जिम्मेदारी से..... - ३६
- सादगी और नम्रता -शैवाल सत्यार्थी ३७
- शस्त्र पूजा का पर्व - ४४


## चित्रकथा


- सबका साथ -देवांशु वत्स १३
- उपदेश -संकेत गोस्वामी ३५
- लाल बुझक्कड़ काका... -देवांशु वत्स ४७


## कविता


- विश्वास -अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' ०२
- रसगुल्ले का स्वाद -महेन्द्र कुमार वर्मा ३६
- दशानन को जलाएँ -माणकचंद गेहलोत ३७
- बलिदान - ४३
- विजय दशमी पर्व -डॉ. विनोदचन्द्र पाण्डेय ५१


## स्तंभ


- छः अँगुल मुस्कान - १६
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' १८
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल २८
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ३४
- पुस्तक परिचय - ४१


## नाटक


- दूध का महत्व -डॉ. प्रीति प्रवीण खरे २३


## बौद्धिक क्रीडा


- दिमाग की दौड़ -देवांशु वत्स १०
- सच है या झूठ -संकेत गोस्वामी १७
- जरा बताओ तो -संकेत गोस्वामी २१
- रामायण पहेलियाँ -संकलित २२
- इस तरह बनाओ -संकेत गोस्वामी ३८
- मस्तिष्क का व्यायाम -देवांशु वत्स ४५
- दिमागी कसरत -देवांशु वत्स ४६
- भूल भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी ४८
- क्या गायब ? -संकेत गोस्वामी ५०



**क्यू आर कोड से भी जमा कर सकते हैं आप देवपुत्र का सदस्यता शुल्क**

क्यू आर कोड से शुल्क जमा करने पर स्क्रीन शॉट, अपना नाम, पूरा पता, पिनकोड सहित एवं मोबाइल नम्बर, प्रबंध संपादक श्री. नारायण चौहान के व्हाट्सएप नंबर 8103700552 पर अवश्य प्रेषित करें।

**क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!**

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।

विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

# रावण का अनोखा पुतला

– देवेन्द्रराज सुथार

गाँव के छोर पर एक पुराना मंदिर था। उस मंदिर में एक बूढ़ा पुजारी रहता था। पुजारी बाबा के पास अनोखी शक्ति थी। वे पशु-पक्षियों की भाषा समझ सकते थे।

हर वर्ष दशहरे के दिन मंदिर में विशेष पूजा होती थी। इस बार भी तैयारियाँ जोरों पर थीं। पुजारी बाबा ने गाँव के बच्चों को बुलाया और कहा– ''बच्चो! इस बार की पूजा में तुम सब भी सम्मिलित रहोगे।''

बच्चे खुशी से उछल पड़े। उनमें से एक लड़की राधा ने पूछा– ''बाबा! हम क्या करेंगे?''

पुजारी बाबा मुस्कुराए– ''तुम सब मिलकर रावण का पुतला बनाओगे।''

अगले दिन से बच्चों ने काम शुरू कर दिया। वे बाँस, कागज और रंग लेकर आए। धीरे-धीरे रावण का विशाल पुतला तैयार होने लगा। एक दिन जब बच्चे काम कर रहे थे, तभी एक चिड़िया उड़ती हुई आई और पुतले पर बैठ गई। वह चहचहाने लगी। पुजारी बाबा ने ध्यान से सुना।

''क्या कह रही है चिड़िया, बाबा?'' राधा ने पूछा। बाबा ने बताया, ''वह कह रही है कि रावण बुरा नहीं था। उसमें भी कुछ अच्छाइयाँ थीं।''

बच्चे हैरान रह गए। उन्होंने हमेशा सुना था कि रावण दुष्ट था।

अगले दिन एक बंदर आया। वह भी पुतले को देखकर कुछ बोला। बाबा ने फिर से ध्यान से सुना।

''बंदर क्या कह रहा है?'' इस बार राहुल ने पूछा।

बाबा ने जवाब दिया– ''वह कह रहा है कि रावण बहुत विद्वान था। वह संगीत और विज्ञान का ज्ञाता था।''

बच्चे और भी चकित हो गए। उन्होंने कभी रावण के बारे में ऐसा नहीं सोचा था।

दशहरे से एक दिन पहले जब पुतला लगभग तैयार हो गया था, एक मोर नाचता हुआ आया। उसने भी कुछ कहा। ''मोर क्या कह रहा है, बाबा?'' सभी बच्चों ने एक साथ पूछा।

बाबा ने गंभीरता से कहा– ''मोर कह रहा है कि रावण में बहुत शक्ति थी, लेकिन उसने उसका अनुचित प्रयोग किया। वह अहंकार में डूब गया था।''

बच्चे सोच में पड़ गए। राधा ने पूछा– ''बाबा! यदि रावण में इतनी अच्छाइयाँ थीं, तो हम उसका पुतला क्यों जलाते हैं?''

बाबा ने समझाया, ''बच्चो! हम रावण को नहीं, बल्कि उसके अहंकार और बुराइयों को जलाते हैं। यह हमें याद दिलाता है कि हमें अपनी शक्ति और ज्ञान का सही उपयोग करना चाहिए।''

राहुल ने कहा– ''लेकिन बाबा! यदि हम केवल बुराइयों को जलाना चाहते हैं, तो पूरा रावण क्यों?''

बाबा ने मुस्कुराकर कहा– ''बहुत अच्छा प्रश्न है राहुल! चलो एक काम करते हैं।''

उन्होंने बच्चों को एक नया विचार दिया। बच्चे उत्साह से काम में जुट गए।

दशहरे की शाम आ गई। पूरा गाँव मंदिर के पास इकट्ठा हुआ। सब रावण दहन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

तभी पुजारी बाबा बच्चों के साथ आए। उन्होंने सबको एक अनोखा पुतला दिखाया। यह पुतला रावण जैसा ही था, लेकिन उस पर कुछ लिखा हुआ था। बाबा ने सबको समझाया, ''इस पुतले पर हमने रावण की बुराइयाँ लिखी हैं– अहंकार, क्रोध, लालच। हम इन्हीं को जलाएँगे।''

फिर उन्होंने बताया कि पुतले के अंदर क्या है। ''इसके अंदर हमने रावण की अच्छाइयों के बारे में लिखा है– उसका ज्ञान, उसकी शक्ति, उसकी भक्ति। ये हमारे पास रहेंगी।''

सब लोग हैरान थे। यह एक नया विचार था। बाबा ने आगे कहा– ''हम सभी में अच्छाइयाँ और बुराइयाँ होती हैं। हमें बुराइयों को जलाना चाहिए और अच्छाइयों को अपनाना चाहिए।''

फिर बच्चों ने मिलकर पुतले की बुराइयों वाली बाहरी परत को आग लगा दी। जैसे-जैसे बुराइयाँ जलतीं गईं, अंदर से अच्छाइयाँ निकलकर हवा में उड़ने लगीं।

सभी लोग तालियाँ बजाने लगे। उन्हें लगा जैसे इस बार दशहरे का असली अर्थ समझ में आया है।

राधा ने खुशी से कहा– ''बाबा! अब हम समझ गए कि दशहरा केवल रावण को हराने का त्यौहार नहीं है। यह हमारे अंदर की बुराइयों को हराने का त्योहार है।''

बाबा ने प्यार से बच्चों के सिर पर हाथ रखा और कहा, ''बिलकुल सही कहा, बच्चो! याद रखना, हर व्यक्ति में अच्छाई और बुराई दोनों होती हैं। हमें हमेशा अच्छाई को चुनना चाहिए।''

उस रात पूरे गाँव ने एक नए तरीके से दशहरा मनाया। वे सब अपने अंदर की बुराइयों को पहचानने और उन्हें दूर करने का संकल्प लेकर घर लौटे। और इस तरह एक छोटे से गाँव में बच्चों की सोच ने दशहरे के अर्थ ही बदल दिए।

**– बागरा (राजस्थान)**

# जिज्ञासु बालपन

– पूनम सिंह 'भक्ति'

''अरे बेटा! ध्यान से।''

पानी में तैर रही मछलियों को पकड़ते देख दादाजी ने राजू को टोका।

''दादाजी! यहाँ कितना अच्छा लग रहा है। हम अब हर रोज यहाँ आया करेंगे।''

''अवश्य।''

''दादाजी! क्या मछलियों को पकड़ सकते हैं?''

''नहीं बेटा! यहाँ मना होता है। वैसे भी पानी में तैरती मछलियों को पकड़ पाना आसान नहीं है।''

''ऐसा क्यों दादाजी?''

पानी में मछलियों की ताकत बढ़ जाती है और वह बहुत तेजी से इधर से उधर भागती हैं और उनके शरीर में चिकनाई होने के कारण हाथों से फिसल जाती हैं।''

वह बहुत गौर से मछलियों को इधर से उधर तैरते हुए देख रहा था। हाथ में पकड़ने की इच्छा उसकी आँखों में झलक रही थी।

''अब चलो दादू! फिर कल आओगे ना?'' उसने अपने दादू की अँगुली पकड़ते हुए कहा– ''हाँ!'' अवश्य।''

वह प्रतिदिन ही अपने दादू के साथ नगर उपवन में आने लगा। घंटों बच्चों के साथ खेलना रंग–बिरंगी तितलियों के पीछे भागने में उसे बड़ा आनंद आता, किन्तु मछलियों को ना छू पाने का दुख उसके मुख पर साफ झलकता था।

''दादू! क्या यहाँ से मछलियों को घर नहीं ले जा सकते मेरा मतलब क्या हम उन्हें घर पर नहीं पाल सकते?''

''हाँ बेटा! पाल सकते हैं।'' सुनते ही वो खुशी से उछल पड़ा।

''अच्छा वह कैसे दादाजी?'' दादाजी की ओर उसने अपनी गर्दन ऊपर उठाकर पूछा। ''एक्वेरियम'' में।

''वह क्या होता है?''

''एक बड़ा–सा शीशे का बक्सा होता है जिसमें पानी भरा होता है हम उसमें छोटी–छोटी मछलियाँ पाल सकते हैं और तुम जब चाहो तो अपने हाथों से भी पकड़ सकते हो।''

''सच्ची?''

''हाँ सच्ची।''

घर पहुँचते वह माँ के पास गया।

''माँ! मुझे एक्वेरियम चाहिए मुझे मछली पालना है।''

''मछली पालना है! लेकिन क्यों?''

''वह इसलिए क्योंकि मैं झील में मछलियों को अपने हाथों से पकड़ नहीं पाता।''

''अच्छा तो यह बात है। अच्छा तुम्हें ज्ञात है मछलियों को पालने के बहुत से नियम होते हैं।''

''नियम।''

''तो क्या झील में भी नियम होते हैं।''

''हाँ, होते हैं।''

''फिलहाल तो तुम ये जानो की, हर तीसरे दिन एक्वेरियम के पानी का एक तिहाई भाग निकालना होता है और फिर नल से ताजा पानी भरना होता है। हर तीसरे सप्ताह के बाद इसमें गुनगुना और नल का ताजे पानी से तीन चौथाई पानी बदलना होता है।''

''ऐसा क्यों करते हैं माँ?''

''ऐसा इसलिए ताकि ऐसा करने से ऑक्सीजन का स्तर बना रहे। और पानी बदलने से उसमें इकट्ठा मछलियों का मल और पैदा हुए जहरीले पदार्थ साफ हो जाते हैं।''

''अरे बाप रे! इतना सारा काम मैं तो नहीं कर

पाऊँगा।''

''तो मछली पालन का विचार छोड़ दो।'' सुनते ही वह उदास हो गया।

''माँ! कृपया आप सफाई कर देना ना मुझे शाला का गृहकार्य भी तो करना होता है।''

''अच्छा, ये तो तुम्हारा काम न करने का बहाना है। यदि मछलियाँ पालना है तो उनकी सेवा करना भी सीखो। खेलने तो जाते हो ना उसी में से समय निकालो।''

''माँ! कृपया मान जाओ ना।''

''बेटा! इधर आओ।'' दादू ने पीछे से आवाज दिया। ''माँ को परेशान मत करो।''

''दादू! देखो न, माँ मान ही नहीं रही। मुझे एक्वेरियम चाहिए।''

''अच्छा ठीक है हम ले आयेंगे। लेकिन प्रॉमिस करो की मछलियों को देखभाल हम दोनों मिलकर करेंगे बोलो ठीक है।''

''जी दादू! आप मुझे समझा देना मैं काम करूँगा।''

''ठीक है यह हुई ना बात।''

''दादू! हम कल ही चलेंगे बाजार।''

''ठीक है।''

अगले दिन दादा पोता मिलकर बाजार से एक एक्वेरियम ले आए। और घर के कोने में जमा दिया और उसमें पानी भर दिया। आधे घंटे के बाद उसका तापमान सेट होने के बाद फिशिंग बैग में लाई गई

मछलियों को पानी के साथ ही एक्वेरियम में डाल दिया।

''दादू! मुझे मछलियों को छूना है।''

''अभी रुक जाओ थोड़ा इन्हें इस नई जगह में सामान्य होने दो।''

''अच्छा दादू! एक बात बताओ इन मछलियों की माँ भी तो होती होंगी ना? जैसे मेरी माँ है।''

''हाँ, होती तो है।''

''फिर ये अकेले अपनी माँ के बिना कैसे रह लेते हैं? मैं तो नहीं रह पाता।''

वैसे इन्हें अपनी माँ से अलग तो नहीं करना चाहिए पर आजकल घर पर शौकिया मछली पालन का दौर चल पड़ा है। यही इनकी दुनिया हो जाती हैं और यह एक साथ कई मछलियाँ रहती हैं न, इसलिए इनका मन भी लग जाता है।''

''हूम...'' उसने धीरे से हामी भरी।

''अच्छा, चलो मछलियों को दाना डाल दो। जैसे हमें भूख लगती है वैसे ही उन्हें भी तो भूख लगती है न? अभी हमारे पास दस मछलियाँ हैं और हर एक मछली को केवल दो दाना ही डालना है।''

''ठीक है दादू।''

''तो अब मछलियाँ गिनकर बताओ कितने दाना डालना है।''

''अगर दस मछली है तो एक मछली को दो दाना देना है फिर तो हमें बीस दाने डालना हैं।'' उसने खुशी से उछलते हुए कहा।

''हाँ-हाँ यह लो एक-एक करके डाल दो अब।''

''डाल दिया।''

अधिकतर समय वह घर पर ही मछलियों के आस-पास रहने लगा था। रोज पानी बदलना दाने डालने का काम वो अपने दादाजी के साथ करता।

''अच्छा बेटा! मैं किसी जरूरी काम से दो-तीन दिन के लिए बाहर जा रही हूँ तुम अपना ध्यान रखना दादा जी को परेशान मत करना और घर के काम में उन्हें सहयोग करना।''

''ठीक है माँ!''

दो-तीन दिन जब बीत गए तब उसने पूछा- ''दादू! माँ कब आएँगी?''

''आ जाएगी बेटा! चलो हम उपवन में चलते हैं।''

''ठीक है। उसी बड़े वाले उपवन में।''

''हाँ।''

वहाँ पहुँचते ही व बतखों की झुंड में खेलने लगा। एक आध को पकड़कर अपने गोद में बिठा लेते हैं। दादू देखो न कितने प्यारे बतख हैं।''

''इन्हें जमीन पर छोड़ दो। अब चलो हम मछलियाँ देखने चलते हैं।''

''ठीक है दादू।''

वो मछली वाले झील के किनारे पर गए जहाँ पानी में अनेकों बड़ी-बड़ी मछलियाँ तैर रही थी बहुत गौर से वह उन्हें बहुत देर तक देखता रहा फिर उसने अचानक दादू को कहा- ''दादू! अब हम घर चलें।''

''हाँ चलो बेटा! लगता है तुम्हें अपने मछलियों की याद आ रही है।''

''हाँ दादू!''

''वह घर पहुँचते ही उसने घंटी बजाई तो उसकी माँ ने दरवाजा खोला।''

''माँ! तुम कब आई?'' और कहते वह माँ से लिपट गया।

''मेरा भी तुम्हारे बिना मन नहीं लग रहा था। इसलिए जल्दी आ गई।''

फिर वहाँ से भागकर मछलियों के पास गया और गौर से उन्हें निहारने लगा।

''दादू! इन्होंने खाना तो खाया ही नहीं है।''

''खा लेंगी बेटा! अभी भूख नहीं होगी।''

''चलो आ जाओ, तुम दादू के साथ नाश्ता कर लो।''

नाश्ता करते हुए किसी गहन सोच में पहुँच गया। ''क्या सोच रहे हो खा लो। नाश्ता ठंडा हो रहा है।'' वह कुछ बोला नहीं और दौड़कर एक्वेरियम के पास गया।

''दादू! उसने खाना अभी नहीं खाया अवश्य उसे अपनी माँ की याद आ रही होगी जैसे मुझे आती थी माँ की।'' उसकी मासूमियत पर उसकी माँ कुछ पल स्तब्ध रह गई।

''अरे–अरे तुम इसे इतना गंभीरता से मत लो जब भूख लगेगी तो खाना खा लेंगे।'' माँ! नहीं, मुझे अच्छा नहीं लग रहा।''

दादू उसके मन की बात समझ रहे थे आज उपवन में भी उसका मन उतना उत्साहित नहीं था।

''जैसे मुझे माँ की याद आती है इन्हें भी तो अपनी माँ की याद आती होगी न?'' लगभग रुआँसे स्वर में उसने कहा। ''तुम कहना क्या चाहते हो।''

''दादू! हम क्यों ना इन्हें वापस इनके अपने माँ के पास छोड़ आए।''

दादू उसके मानसिक अवस्था को समझ रहे थे। ''अच्छा ठीक है कल इन्हें वापस पानी में हम छोड़ आएँगे।'' सुनते ही उसके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी। दादाजी ने एक्वेरियम वाले को घर पर बुलाया और मछलियों को उन्हें एक्वेरियम सहित सौंप दिया।

राजू बहुत खुश था। ''दादू! आज हम बड़े वाले उपवन में चलेंगे। और खाने के लिए भुने चने लेकर भी जाएँगे।'' ''ठीक है बेटा अवश्य।'' दोनों नगर उपवन की ओर निकल पड़े।

– दिल्ली

बौद्धिक क्रीडा

# दिमाग की दौड़

– देवांशु वत्स

**मित्रो! बता सकते हो कि पँक्ति में सबसे पीछे कौन खड़ा है?**

उत्तर– पँक्ति में सबसे पीछे मोनू खड़ा है।

# विश्व भर में देवीपूजा

– नरेंद्र देवांगन

'देवी' संस्कृत भाषा का शब्द है, जो शक्ति का पर्याय है। दुनिया का कोई भी धर्म या सभ्यता ऐसी नहीं है, जिसमें दैवीय शक्ति के रूप में देवी की कल्पना किसी न किसी रूप में न हो। संसार के सभी महाद्वीपों में प्राचीन काल में देवी पूजा के प्रमाण मिलते हैं। एशिया में भारत ही नहीं, चीन, जापान, म्यांमार, वियतनाम, लाओस, कंपूचिया, थाईलैंड व इंडोनेशिया आदि देशों में देवी की प्राचीन प्रतिमाएँ और शैल चित्र आज भी विद्यमान हैं। इस्लाम से पहले अरब आदि देशों में भी मूर्ति पूजा होती थी। बेबीलोनिया की देवी का प्रतीक चिह्न चाँद और सितारा था। इसी प्रकार यूरोप, लैटिन अमेरिका और अफ्रीका आदि महाद्वीपों में ईसा पूर्व देवी पूजा का प्रचलन था।

भारत में हर ईश्वरीय शक्ति वाली स्त्री को देवी कहा जाता है। पार्वती देवों के देव महादेव की पत्नी हैं। इसीलिए पार्वती को महादेवी भी कहा जाता है। महादेव के तीन रूप हैं ब्रह्मा, विष्णु व महेश। इसी प्रकार महादेवी के भी तीन रूप हैं सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा। सरस्वती बुद्धि और विवेक की देवी हैं। वसंत पंचमी पर इनकी पूजा होती है। लक्ष्मी धन और ऐश्वर्य की देवी हैं। इनकी पूजा कार्तिक मास की अमावस्या की रात को होती है। दुर्गा की सृष्टि त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने शक्ति के रूप में महिषासुर के वध के लिए की थी। नवरात्रि के अवसर पर इनकी पूजा की जाती है। नवदुर्गा के रूप हैं– शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री।

देवी के कुछ अन्य नाम भी हैं सती, चामुंडा, दक्षयानी, काली, माया, महाविद्या, पृथ्वी, राधा, तारा, अंबिका, भवानी, भूतमाता व ब्राह्माणी आदि। इनके अलावा और भी बहुत सी देवियाँ हैं, जिनकी पूजा भारत में होती है।

त्रिदेव की कल्पना हिंदू धर्म में ही नहीं, बल्कि अनेक धर्मों में की गई है। यूनान की मोइरे, चैरिटीज, इरिनीज व नॉर्स की नॉर्न्स को त्रिदेवी के अलग–अलग स्वरूप में दर्शाया गया है। जबकि यूनान की ही

हैकेट को तीनों रूपों में भी एक साथ दर्शाया गया है। इस प्रकार त्रिदेवी के बारे में विद्वानों के दो विचार हैं। एक, वह एक ही देवी हैं। दूसरा, वह तीन अलग-अलग देवियाँ हैं। जैसा कि आइरिश ब्रिगिड और उनकी दो बहनें हैं, जो ब्रिगिड और मॉरिगन कहलाती हैं।

त्रिदेवी यानी 'ट्रिपल गॉडेस' शब्द का प्रयोग अँग्रेजी के कवि रॉबर्ट ग्रेव्स ने १९४८ में अपनी पुस्तक 'व्हाइट गॉडेस' में किया है, जबकि इसका प्रचलन कैंब्रिज और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से संबंधित स्कूल 'मिथ एंड रिचुअल' में १९वीं शताब्दी में हो गया था।

मिस्र, यूनान, रोमन आदि सभ्यताओं में भी त्रिदेवी की कल्पना थी। इनमें त्रिदेवी को चंद्रमा के तीन रूप उगते हुए अर्द्ध चंद्र, पूर्ण चंद्र और अस्त होते हुए अर्द्ध चंद्र के रूप में दर्शाया गया है। ये 'ट्रिपल गॉडेस' के तीन रूप कुँआरी (मेडन), माँ (मदर) और वृद्धा (क्रोन) हैं। असल में ये मनुष्य के जन्म, जीवन और मृत्यु व पुनर्जन्म को दर्शाने वाले तीन पहलू हैं।

भाषा और साहित्य के साथ-साथ धर्म और संस्कृति भी एक देश से दूसरे देश में होते हुए पूरे विश्व में फैल गई थी। प्राचीन मिस्र में बच्चे के जन्म पर भाग्य की देवियों के संयुक्त रूप में आने की मान्यता थी। कुछ ने यह संख्या सात तो कुछ ने नौ प्रकट की है। यूनान के लोक साहित्य में बच्चे के जन्म की छठी रात्रि में भाग्य की देवी के घर में आने की मान्यता का पता चलता है।

इस अवसर पर घर में एक छोटी चौकी पर भोजन और पानी रखा जाता था, ताकि भाग्य की देवी आकर बच्चे के अच्छे भाग्य के लिए उसे आशीर्वाद दे। यही परंपरा भारत में बच्चे के जन्म के छठे दिन छठी पर होती है। इसी प्रकार नॉर्स और स्कैंडिनेविया की कथाओं में इस प्रकार का उल्लेख आता है।

इन त्रिदेवियों में मेसोपोटामिया/बेबीलोनिया

की इनाना/इश्तार, स्कैंडिनेविया की फ्रेया प्रेम और युद्ध की देवियाँ हैं। अन्य देवियों में एथेन, हेरा और अफ्रोदिति हैं। मिस्र की आइसिस, चीन की क्वान यिन, रोमन की वीनस व सेलेटिक की मॉरिगन भी इसी श्रेणी में हैं। विश्वभर में अधिकांश देवियों के चित्रों में चांद और शेर को दर्शाया गया है। चांद स्त्री की कोमलता का प्रतीक है और शेर शक्ति का। ये दोनों त्रिदेवी के भी प्रतीक हैं। इसके अलावा उल्लू, मोर, गाय, गरुड़ और सर्प भी देवियों के प्रतीक हैं।

जीवित कन्याओं और महिलाओं को भी प्राचीन काल से देवी की उपमा दी जाती रही है। मिस्र की राजकीय महिलाएँ क्लियोपेट्रा और हैशेसुट जीवित देवी के रूप में प्रतिष्ठित थीं। चीन, रोम, जापान में भी ऐसी परंपरा थी। एलिजाबेथ प्रथम को भी 'लिविंग गोडेस' का दर्जा प्राप्त था। नेपाल में आज भी यह परंपरा है।

यूरोप और अमेरिका में लोग फिर से देवी पूजा की ओर आकर्षित हो रहे हैं। दिलचस्प बात तो यह है कि अमेरिका की विश्वविख्यात 'स्टेचु ऑफ लिबर्टी' को बेबीलोनिया की देवी इश्तार का प्रतिरूप माना जाता है जो प्रेम, स्वतंत्रता, शक्ति और स्वर्ग की देवी हैं। हॉलिवुड की बहुत सी फिल्मों की शुरूआत इसी देवी के चित्र से होती है।

**– खरोरा, रायपुर (छत्तीसगढ़)**

# सबका साथ

चित्रकथा : देवांशु वत्स

# रावण और इंद्र का युद्ध

– कुमुद कुमार

दादाजी अपना चश्मा लगाये और लाठी टेकते हुए जैसे ही चौपाल पर आये, सब बच्चों ने उनके चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लिया। जब दादाजी आराम से अपने आसन पर बैठ गए, तब शोभित ने कहा– ''दादाजी! आज हमें रामायण से कोई ऐसी कहानी सुनाना जो हमने सुनी ना हो और वह कहानी वीरता और पराक्रम से भरी हो।'' ''क्या बच्चो! तुम सब भी ऐसी ही कहानी सुनना चाहते हो?'' दादाजी ने पूछा। ''जी दादाजी! हम सब भी ऐसी ही कहानी सुनना चाहते हैं।'' सब बच्चों ने एक साथ कहा।

''ठीक है बच्चो! आज मैं तुम्हें ऐसी ही कहानी सुनाऊँगा। आप सब ने राम और रावण के युद्ध की कहानी तो सुन ही रखी होगी?'' ''जी दादाजी!'' बच्चों ने एक स्वर में कहा। ''तो फिर मैं तुम्हें आज रावण और इंद्र के बीच हुए युद्ध की कहानी सुनाता हूँ। क्या किसी ने यह कहानी सुन रखी है?''

''नहीं दादाजी!'' सब बच्चे एक साथ बोले।

तब दादाजी ने रावण और इंद्र के बीच हुए युद्ध की कहानी सुनानी शुरू की। सब बच्चे बड़े ध्यान से कहानी सुनने लगे। ''बच्चो! ब्रह्मा जी से दुर्लभ वरदान प्राप्त करने के बाद रावण के मन में तीनों लोकों को जीतने की इच्छा जागी। इसी ध्येय हेतु वह कैलास पर्वत को पार करके सेना सहित इंद्रलोक जा पहुँचा। उसे सेना सहित आते देख देवराज इंद्र ने अपने पास आये हुए देवताओं आदित्यों, वसुओं, रुद्रों, साध्यों और मरुद्गणों से रावण से युद्ध करने के लिए कहा।''

यह सुनकर संगीता ने पूछा– ''तो क्या दादाजी! इंद्र ने रावण से युद्ध नहीं किया?''

''बच्चो! उस समय इंद्र को रावण से भय हो गया था। इसलिए वे भगवान विष्णु के पास उनकी सहायता और सलाह लेने के लिए चले गए। लेकिन विष्णु ने इंद्र को बताया कि ब्रह्म जी के वरदान के कारण रावण को न तो असुर ही और न ही देवता मार सकते हैं। भगवान विष्णु ने उस समय स्वयं भी रावण से युद्ध करने से मना कर दिया और इंद्र को ही निर्भय होकर रावण से युद्ध करने की सलाह दी।''

''इसके बाद क्या हुआ दादाजी?'' रश्मि ने पूछा। ''बच्चो! इसी बीच देवताओं और राक्षसों में भयंकर संग्राम छिड़ गया था। रावण ने नाना सुमाली ने देवताओं पर जोरदार हमला किया और अपने पराक्रम ने उन्हें मार भगाया। लेकिन तभी देवताओं की ओर से वसुओं में से आठवें वसु ने युद्ध क्षेत्र में प्रवेश किया। एक बार फिर से भयंकर युद्ध शुरू हुआ। लेकिन सुमाली के पराक्रम के सामने एक बार फिर से देवता बिखर गए।'' ''इसका मतलब दादाजी! राक्षस जीत गए?'' सुमित ने पूछा।

''नहीं बेटा! ऐसा नहीं हुआ। देवताओं को ऐसे हारते देख सावित्र को बड़ा क्रोध आया। उसने सुमाली को आगे बढ़ने से रोक दिया। फिर तो दोनों में बड़ा रोमांचकारी युद्ध हुआ। सावित्र ने सुमाली का रथ तोड़फोड़ दिया और 'कालदंड' नामक गदा के प्रहार से सुमाली को यमलोक पहुँचा दिया।''

''वाह दादाजी वाह! इसके बाद तो युद्ध रुक गया होगा।'' शोभित ने पूछा।

''नहीं बेटा! ऐसा नहीं हुआ। जब रावण का पुत्र मेघनाद ने सुमाली के मारे जाने की सूचना मिली और उसने राक्षस सेना को युद्ध के मैदान से भागते देखा तो वह बड़ा कुपित हुआ। उसने राक्षसों को पुकारा और फिर से युद्ध शुरू किया। उसकी वीरता के सामने देवता टिक न सके। वे भागे भागे इंद्र के पास पहुँचे। उनकी बात सुनकर इंद्र ने अपने पुत्र जयंत को रणक्षेत्र में भेजा।''

''दादाजी! इंद्र और जयंत के बीच कैसा युद्ध हुआ?'' भोलू ने उत्साह में भरकर पूछा।

''अरे भोलू! उनमें तो बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। मेघनाद ने अपनी मायावी शक्ति से युद्ध के मैदान में अंधकार ही अंधकार पैदा कर दिया। ऐसा होने से कोई किसी को पहचान ही नहीं पाता था। इससे देवता देवता को और राक्षस राक्षस को मारने लगे। इस माया से जयंत को बचाने के लिए उसका नाना पुलोमा आया और उसे लेकर समुद्र में घुस गया।''

तभी दीपा ने कुछ सोचते हुए कहा– ''दादाजी! जयंत के गायब होने से तो देवता बड़े परेशान हुए होंगे।'' ''बिल्कुल दीपा! जयंत को अपने बीच न पाकर देवताओं में तो भगदड़ ही मच गयी। ऐसा जानकर इंद्र ने अपने सारथी मातलि से उनका रथ लाने के लिए कहा। इंद्र के रथ पर सवार होते ही देवताओं का साहस कई गुना बढ़ गया। लेकिन उसी समय राक्षसराज रावण ने भी युद्धक्षेत्र में प्रवेश किया। उसने अपने पुत्र मेघनाद को युद्ध करने से रोका और स्वयं युद्ध करने लगा।'' ''ओह दादाजी! इनमें तो बड़ा भीषण युद्ध हुआ होगा?'' सुमित ने पूछा।

''बिल्कुल बेटा! इंद्र ने अपने रणकौशल से राक्षसों में खलबली मचा दी। यह देखकर रावण इंद्र के सामने आ गया। दोनों ने एक-दूसरे पर बाणों की बौछार कर दी। देवताओं के पराक्रम और बलशाली प्रहार से राक्षसी सेना का केवल दसवाँ भाग ही बचा। शेष यमलोक पहुँच गए। तब रावण ने अपने सारथी से कहा कि वह उसे देवताओं की सेना के मध्य से उस पार ले चले। उसने देवताओं की सेना में उत्तर दिशा से प्रवेश किया। लेकिन इंद्र ने दक्षिण दिशा से आकर रावण को घेर लिया। इंद्र जानते थे कि रावण को

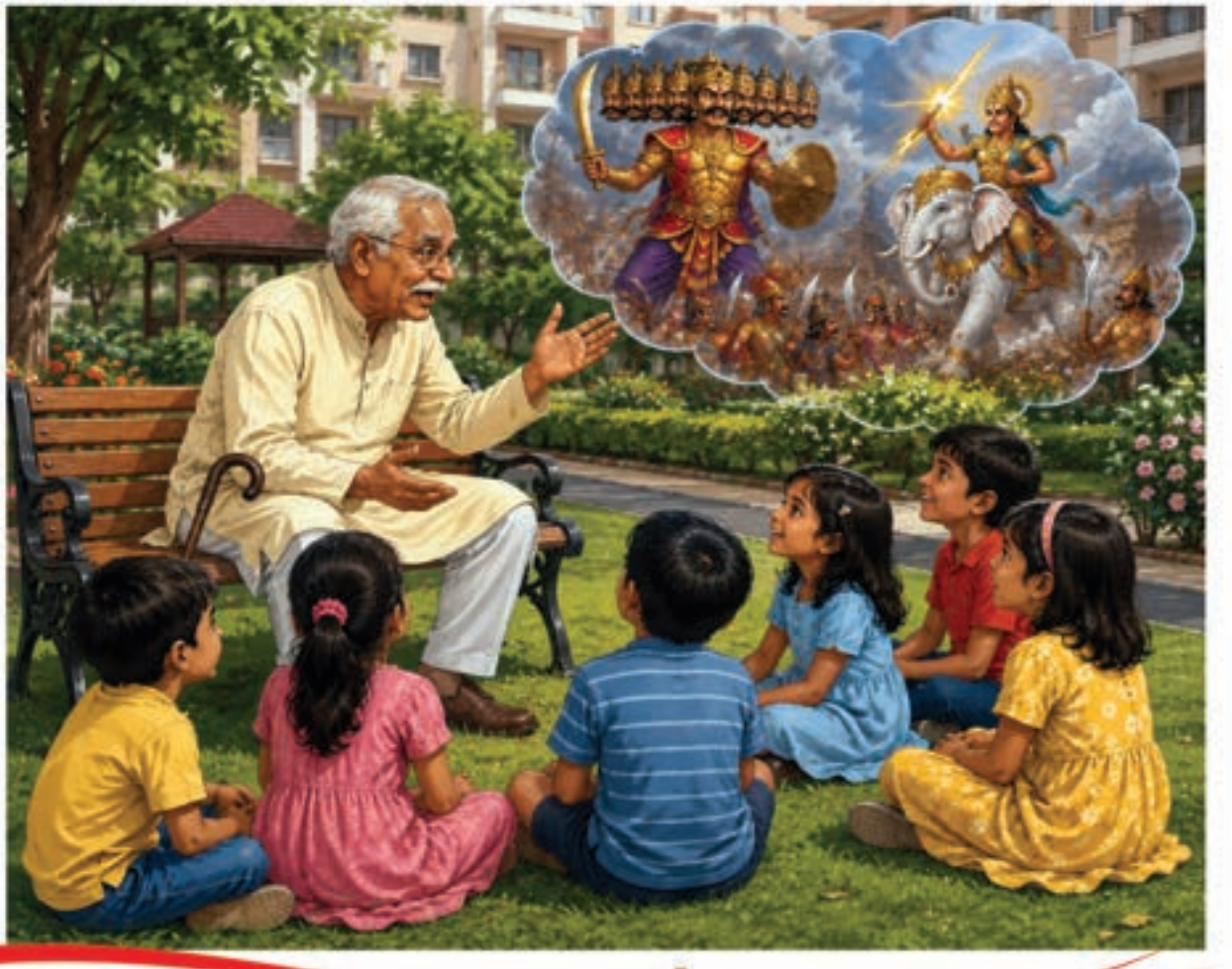

ब्रह्माजी के वरदान के कारण मारा नहीं जा सकता लेकिन पकड़ा जा सकता है।''

''तो क्या इंद्र ने रावण को पकड़ लिया, दादाजी?'' दीपा ने उत्सुकता से पूछा।

''दीपा! हुआ ये कि मेघनाद ने जब अपने पिता रावण को देवताओं से घिरा देखा तो उसने एक बड़ी ही भयंकर तपोमयी माया रची। इस माया में उसने स्वयं को छुपा लिया। वह किसी को दिखाई न पड़ता था। फिर वह इंद्र पर टूट पड़ा। उसी समय रावण ने इंद्र के सारथी मातलि को घायल कर दिया। तब इंद्र अपने रथ को छोड़ ऐरावत हाथी पर सवार हो गए। काफी देर तक युद्ध होता रहा। जब मेघनाद ने यह जान लिया कि इंद्र काफी थक गए हैं तब वह उन्हें अपनी माया से बाँधकर अपनी सेना में ले आया। इंद्र के बाँधे जाने पर देवताओं ने रावण पर बाण वर्षा करके उसके शरीर को जर्जर कर दिया। तब मेघनाद ने रावण से कहा कि इंद्र को बाँधते ही उनकी जीत हो गई है। इसलिए अब युद्ध करना व्यर्थ है। आओ, घर चलें।''

''तो क्या दादाजी! इंद्र मेघनाद और रावण की कैद में ही रहे है?'' सुमित ने पूछा। ''नहीं बेटा! ऐसा नहीं हुआ। ब्रह्माजी ने मेघनाद को एक बहुत बड़ा वरदान और उसे इंद्रजीत नाम देकर इंद्र को उसकी कैद से छुड़ाया। ''वाह दादाजी! ब्रह्माजी ने बहुत अच्छा किया नहीं तो हमारे स्वर्ग का क्या होता?''

दीपा की यह मासूम बात सुनकर सब बच्चे हँस पड़े और दादाजी भी मुस्कुराये बिना न रह सके। इसी के साथ दादाजी की कहानी समाप्त हो गई।

**– बिजनौर (उ. प्र.)**

## छः अँगुल मुस्कान

**एक दोस्त (दूसरे दोस्त से)**– चार सौ रुपये उधार देना।

**दूसरा दोस्त**– नहीं, मैं उधार नहीं देता

**पहला दोस्त**– तो फिर ऐसे ही दे दो।

*****

**अध्यापक**– तुमने अभी तक दुनिया का मानचित्र क्यों नहीं खरीदा?

**छात्र**– पिता जी कहते हैं दुनिया बड़ी तेजी से बदल रही है। मैं दुनिया के स्थिर होने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

*****

**दुकानदार (व्यक्ति से)**– महाशय आप बाल डाई करने का पाउडर इतना अधिक क्यों खरीदते हैं?

**व्यक्ति**– अपने कार्यालय के स्टाफ को देने के लिए।

**दुकानदार**– अपने स्टाफ को क्यों देते हैं?

**व्यक्ति**– ताकि पुराने स्टाफ जिनके बाल सफेद हो रहे हैं, वह यह न कह दें कि यहाँ नौकरी करते–करते बाल सफेद कर लिए।

*****

**अध्यापक**– राजेश, बताओ पजामा एक वचन है या बहुवचन।

**राजेश**– सर! ऊपर से तो एक वचन है और नीचे से बहुवचन।

*****

**एक बच्चे से उसकी अध्यापिका ने पूछा**– ''बेटा तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं?''

**बच्चा**– ''जो माँ कहती है।'' बच्चे ने मासूमियत से उत्तर दिया।

**जब अध्यापिका ने फिर पूछा**– ''बेटा! तुम क्या करते हो?''

**बच्चा**– ''जो आप कहती हैं।''

*****

**शिक्षक**– ''सबसे मीठे फल तथा सबसे कड़वे फल का नाम बताओ?''

**सोहन**– ''जी! परीक्षाफल। यह फल किसी को मीठा तो किसी को कड़वा लगता है।''

# सच है या झूठ ?

प्रस्तुति- ...

जीवाश्म कितना पुराना है यह पता चलता है उसमें मौजूद फ्लोराइड की मात्रा से. सच है या झूठ ?

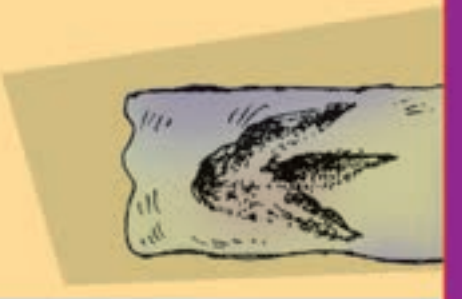

उत्तर- जीवाश्म कितना पुराना है यह पता चलता है उसमें मौजूद कार्बन - 14 से.

'फुलचुकी' सबसे छोटी भारतीय चिड़िया है जिसका आकार मानव अंगूठे के बराबर होता है. सच है या झूठ ?

उत्तर है.

दूध में स्थित गैसें हल्की होने के कारण सतह पर पपड़ी बनाती हैं जिसे मलाई कहते हैं. सच है या झूठ ?

उत्तर- दूध उबलने पर निकाय के दाब में कमी के कारण दूध में स्थित गैसें दूध की सतह पर पपड़ी बनाती हैं जिसे मलाई कहते हैं.

चमकदार लाल पत्थर हमेशा मूंगा ही होता है. सच है या झूठ ?

उत्तर- मूंगे का जिवाणु जीवन लगभग समाप्त जैसी ही होती है.

# अनूठी कल्पनाओं के बाल कवि : डॉ. अश्वघोष

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

डॉ. अश्वघोष अनूठी कल्पनाओं के समर्थ बाल कवि थे। उनकी सरल, सहज और सुबोध कविताओं में बालकों के कोमल मन की सफल अभिव्यक्ति है। वे प्रौढ़ साहित्य के भी समर्थ रचनाकार थे। गद्य और पद्य विधाओं में उत्तम सृजन के अतिरिक्त उन्होंने अपनी शोध वृत्ति से भी हिंदी साहित्य जगत को समृद्ध किया।

डॉ. अश्वघोष का वास्तविक नाम ओमप्रकाश शर्मा था। उनका जन्म २० जुलाई १९४१ को उत्तर प्रदेश के रन्हेरा, बुलंदशहर में हुआ। उनके पिताजी रामकृष्ण शर्मा और माताजी कस्तूरी देवी थीं।

अश्वघोष जी बचपन से ही बड़े चिंतनशील और नटखट थे। उन्होंने एक स्थान पर लिखा है कि जब बचपन में डाँट पड़ती थी तो वे प्रार्थना करते थे कि हे भगवान! मुझे जल्दी से बड़ा बना दो।

पर बड़ा होने पर जब उन्होंने बच्चों के अलमस्त जीवन को देखा तो धमाल करते बच्चों को देख हमेशा यही लगता था कि काश! फिर से बच्चा हो जाऊँ।

यह कहाँ संभव था। इसीलिए उन्होंने बचपन को फिर से जीने के लिए बाल काव्य लेखन का क्षेत्र चुना। उनकी बाल कविताओं में चिंतनशील और नटखट बालक की सहज उपस्थिति देखने को मिलती है।

गीत, गजल, नवगीत और कहानी विधाओं के साथ-साथ वे बाल कविता के सक्रिय हस्ताक्षर थे। पहाड़ पर जैसी कविता उन्होंने लिखी, वैसी बाल साहित्य में दूसरी नहीं है।

बच्चो के लिए उन्होंने डुमक-डुमक-डुमक-डुम, तीन तिलंगे, राजा हाथी, बाइस्कोप निराला, ताक धिन धिन, सोन चिरैया के क्या कहने और आगड़ बिल्ला, बागड़ बिल्ला जैसी मजेदार पुस्तकें लिखीं।

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर और प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय जैसी संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित किया। अश्वघोष जी ने बाल शिक्षा के क्षेत्र में पाठ सामग्री निर्माण की दृष्टि से भी उल्लेखनीय कार्य किया।

२६ अक्टूबर २०२४ को देहरादून में उनका आकस्मिक निधन हो गया। आइए, उनकी कुछ बेजोड़ बाल कविताएँ पढ़ते हैं–

## काना बाती कुर्र

कानाबाती कुर्र, चिड़िया उड़ गयी फुर्र।
चिड़िया पहुँची दिल्ली, वहाँ मिली इक बिल्ली।
बिल्ली बोली घुर्र, चिड़िया उड़ गई फुर्र।
चिड़िया पहुँची जैसलमेर,
वहाँ मिला उसको इस शेर।
कहा शेर ने गुर्र,
चिड़िया उड़ गई फुर्र।
फिर चिड़िया स्कूल में आई,
जम कर उसने करी पढ़ाई।
घंटी बोली घुर्र,
चिड़िया उड़ गई फुर्र

## देखा नहीं पहाड़

अब तक हमने देखी बाढ़,
लेकिन देखा नहीं पहाड़!
सुना वहाँ परियाँ रहती हैं,
कल-कल-कल नदियाँ बहती हैं।
झरने करते हैं खिलवाड़,
लेकिन देखा नहीं पहाड़!

और सुना है लोग निराले,
घर में नहीं लगाते ताले।
हरदम रखते खुले किवाड़,
लेकिन देखा नहीं पहाड़!
यह भी सुना बर्फ पड़ती है,
पेड़ों पर मोती जड़ती है।
सब करते हैं उसको लाड़,
लेकिन देखा नहीं पहाड़!

जीव-जंतु हैं वहाँ अनोखे,
चीते, भालू, हरियल तोते।
करते रहते सिंह दहाड़,
लेकिन देखा नहीं पहाड़!।

## समय नहीं है

नानी-नानी! कहो कहानी,
समय नहीं है, बोली नानी।
फिर मैंने पापा को परखा,
बोले-समय नहीं है बरखा।

भैया पर भी समय नहीं था,
उसका मन भी और कहीं था।
मम्मी जी भी लेटी-लेटी,
बोलीं-समय नहीं है बेटी।

मम्मी, पाना, नानी, भैया,
दिन भर करते ता-ता-थैया।
मेरी समझ नहीं आता है,
इनका समय कहाँ जाता है!

## गरमी

अब गरमी की बात सुनो, चाहो तो दिन-रात सुनो।
शहरों की बातें छोड़ो, जलता है देहात सुनो।
चिड़ियों ने गाना छोड़ा, बदल गए हालात सुनो।
तपे दुपहरी भट्टी-सी, गरमी के उत्पात सुनो।
मोर वनों को समझाते, आएगी बरसात सुनो।

## बादल

उमड़-घुमड़ जब आता बादल,
बरखा का जल लाता बादल।
ताल-तलैया, सोनचिरैया,
सबकी प्यास बुझाता बादल।
छत पर जमी धूल को झटपट,
बिन झाड़ू धो जाता बादल।
तरह-तरह के वेष बदलकर,
अपनी छटा दिखाता बादल।
नींद लगे तो बिस्तर के बिन,
पर्वत पर सो जाता बादल।

## बस्ता मुझसे भारी है

यह कैसी लाचारी है,
बस्ता मुझसे भारती है!
कंधा रोज भड़कता है,
जाने क्या-क्या बकता है,
लाइलाज बीमारी है,
बस्ता मुझसे भारी है!
जब भी मैं पढ़ने जाता,
जगह-जगह ठोकर खाता,
बस्ता क्या अलमारी है,
बस्ता मुझसे भारी है!
कान फटे सुनते-सहते,
मुझे देखकर सब कहते,
बालक नहीं, मदारी है,
बस्ता मुझसे भारी है!

– शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)

# जरा बताओ तो...

प्रस्तुति- संकेत गोस्वामी

1

इस पेड़ के तने में काफी ऊँचाई पर शाखाएं फूटती हैं। इसे बड़ा ही शुभ और औषधि युक्त गुणों वाला माना जाता है। इसकी पत्तियां कटावदार किनारे वाली होती हैं। कौनसा पेड़ है यह?

2

भारत के दक्षिण में मौजूद इस देश को पहले सीलोन भी कहते थे. इस देश की राजधानी का नाम क्या है?

3

ऐसा विचित्र और जटिल घोंसला बनाने वाली यह चिड़िया पक्षी जगत की इंजीनियर कही जाती है. कौन है वो ?

सही उत्तर- 1. नीम का 2. कोलंबो 3. बया.

# रामायण पहेलियाँ

०१) कटे अनेकों शीश पर, मरा नहीं वो नीच
राम–लखन हैरान थे, समर भूमि के बीच।
तभी विभीषण ने आकर क्या भेद बताया
और राम ने बाण मारकर उसे गिराया।।

०२) घर का भेदी वह बना, छोड़ दुष्ट का साथ
धर्म मार्ग पर चल पड़ा, पकड़ राम का हाथ।
लात भरे दरबार बड़े भाई की खाकर
छोड़ साथ मिल गया राम–लक्ष्मण से जाकर।।

०३) वायु देवता के थे सुत, अंजनि माता का नाम
चालीसा गाकर हम उनको, करते नित्य प्रणाम।
राम लक्ष्मण के रखवारे, थे अतुलित बलधाम
बचपन में था सूर्य चबाया, बोलो उनका नाम।।

०४) पापी रावण जा रहा, ले सीता को साथ
किस पक्षी ने थे किए, उससे दो–दो हाथ।
अंतिम दम तक उसने अपना धर्म निभाया
और राम को पूरा विवरण था बतलाया।।

०५) वायुमार्ग से भागा रावण, सीता जी को लेकर
उसको रोका पक्षिराज ने, प्रबल चुनौती देकर।
रावण ने उसको मारा तलवार चलाकर
लेकिन त्यागे प्राण, राम को सब बतलाकर।।

०६) रामकाज कीन्हें बिना, मोहि कहाँ विश्राम
जिसका यह उद्घोष था, बोलो उसका नाम।।

०७) राजवंश के थे गुरु, सब आदर करते थे
राजा–रानी मानते, जैसा वे कहते थे।
राम–लखन को वन ले जाने, विश्वामित्र पधारे
दशरथ को तैयार किया, रघुकुल के काज सँवारे।।

०८) सीता का अपहरण किया फिर युद्ध राम से ठाना
नाम बताओ उस पापी का, क्या था ठौर ठिकाना।।

०९) लक्ष्मण और शत्रुघ्न जैसे, जिसके थे दो लाल
उस माता से अधिक कोई, क्या होगा खुशहाल।
भैया की रक्षा हित भेजा लखनलाल को वन में
नीरस जीवन बिता दिया, संतोष रखा पर मन में।।

१०) राजा दशरथ के यहाँ, प्रकटे भाई चार
जिस–जिस ने भी यह सुना, हर्षित हुआ अपार।
मात–पिता के थे वे चारों राजदुलारे
नाम बताओ अवधपुरी के थे जो प्यारे।।

११) राम–लक्ष्मण के पिता, थे रघुकुल की शान
वचन नहीं जाने दिया, भले दे दिये प्राण।
भेज राम को वन में फिर वे उठ ना पाये
राम–राम कहते–कहते ही प्राण गँवाये।।

१२) सीता जी के थे पिता, मिथिला के अधिराज
राजा थे फिर भी ऋषि जैसे थे सब काज।
इसीलिए तो उनको सब विदेह कहते थे
सभी प्रजाजन सुख और मंगल से रहते थे।।

१३) किया राम से जब शुरू, लंका पर अभियान
शंकर की पूजा करी, धन्य हुआ वह स्थान।
एक नहीं दो शिव पिंडी हैं बनी वहाँ पर
है दक्षिण में जाते लाखों लोग वहाँ पर।।

१४) रानी की थी प्रिय दासी, उसके मायके से आई
उसके कारण रघुकुल का इतिहास बना दुखदाई।
रानी को भड़का कर उसने वह नाटक रचवाया
राजतिलक तो दूर, राम को जंगल भिजवाया।।

उत्तर–१) नाभि में अमृत था। २) विभीषण। ३) हनुमान। ४) रामायण जटायु। ५) जटायु, रावण। ६) हनुमान। ७) ऋषि वशिष्ठ। ८) लंका का राजा रावण। ९) सुमित्रा। १०) राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न। ११) राजा दशरथ। १२) राजा जनक। १३) रामेश्वरम्। १४) मंथरा।

# दूध का महत्व

– डॉ. प्रीति प्रवीण खरे

पात्र परिचय

१) विजया।
२) आलोक।
३) हेतल।
४) प्रांशु।
५) नानी।
६) नाना।

## दृश्य

(हेतल और प्रांशु सुबह जल्दी उठकर नाना–नानी के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उनके पिताजी आलोक अपने दैनिक कार्यों में लगे बीच–बीच में पत्नी विजया को घर के काम में सहायता भी करते जा रहे हैं। विजया रसोईघर में भोजन बना रही है।)

**प्रांशु**– पिताजी! और कितनी देर है नाना–नानी के आने में?

**आलोक**– बेटा! समय तो हो चुका है आते ही होगें।

**विजया**– (काम करते हुए अंदर से पूछती है) हेतल, प्रांशु नाश्ता अभी करोगे कि नाना–नानी के साथ?

**हेतल**– माँ! मैं तो नाना–नानी के साथ ही करूँगी। हाँ प्रांशु को भूख जोर से लग रही है। देखो कैसे नाखून खा रहा है। उसे नाश्ता दे दीजिए।

**प्रांशु**– माँ! भूख तो लगी है, मगर मैं नाखून नहीं खा रहा था, म म मैं तो कुछ सोच रहा था। अच्छा थोड़ा सा नाश्ता कर ही लेता हूँ दे दो। थोड़ा नाना–नानी के साथ बाद में खा लूँगा।

**विजया**– बेटा पेट भर कर खा लो। दोबारा उनके साथ फिर खा लेना।

**प्रांशु**– मुझे ब्रेड सेंडविच देना।

**विजया**– और दूध कौन पियेगा?

**प्रांशु**– माँ! कितनी बार बोलू! मुझे दूध अच्छा नहीं लगता।

**विजया**– दूध पियोगे नहीं तो तुम्हारे शरीर को कैल्शियम कैसे मिलेगा? कैल्शियम के बिना हड्डियों को मजबूती कैसे मिलेगी। (मन ही मन बुदबुदाती है) आने दो तुम्हारे नाना–नानी को अब के ही तुम्हें समझायेगें।

**आलोक**– विजया! क्यों बच्चों के पीछे पड़ती हो। खाने–पीने दो जो उन्हें अच्छा लगे।

**विजया**– देखो जी मैं माँ हूँ। मेरी जिम्मेदारी है कि मैं अपने बच्चों का, उनके स्वास्थ्य का पूरी तरह से ध्यान रखूँ।

भोजन मनपसंद के साथ–साथ पौष्टिक भी होना चाहिए। बच्चों एवं बड़ों सभी को शारीरिक जरूरतों के अनुसार प्रोटीन, विटामिन, कैल्शियम, आयरन, मिनरल्स, वसा आदि की आवश्यकता

होती है। इनके अभाव में बच्चों की शारीरिक वृद्धि रुक जाती है।

**आलोक**– तुम्हारी बात तो ठीक है। लेकिन बच्चों को समझाने के लिए तुम्हें उनके साथ बच्चा बनना पड़ेगा।

**विजया**– आप तो ऐसे बता रहे हो जैसे दिन भर आप ही बच्चों का ध्यान रखते हो। (इतने में हेतल जोर से विजया को आवाज लगाती है।)

**हेतल**– माँ! ओ माँ!

**विजया**– बोलो भी! क्या है? क्यूँ आवाज लगा रही हो।

**हेतल**– माँ! मैं यह जानना चाहती हूँ कि नाना–नानी कब तक आयेंगे। आपने तो कहा था ९ बजे तक आ जायेंगे, लेकिन अब तो दस बजने वाले हैं।

**विजया**– आते होंगे। अच्छा यह बताओ भूख लग रही है? लग रही है ना! आओ नाश्ता कर लो।

**हेतल**– अच्छा दे दो। माँ मुझे दही और पराठा देना।

**विजया**– पाँच मिनट का समय दो। मैं गरमा गरम पराठा बनाकर अभी लाई। (आलोक से भी खाने के लिए पूछती है और किचन में नाश्ता बनाने लगती है।)

**आलोक**– विजया मेरे लिए दूध डालकर फलों का शेक बना देना आज में सिर्फ वही लूँगा। खाऊँगा कुछ नहीं।

**विजया**– (हेतल और प्रांशु को आवाज लगाती है।)

**हेतल**– अभी आई माँ!

**विजया**– लो तुम्हारा दही और पराठा तैयार है।

**हेतल**– माँ! दही में चीनी डाली है ना!

**विजया**– चख कर देखो और बताओ।

**हेतल**– माँ! एक चम्मच चीनी और डाल दो।

**विजया**– यह लो डाल दी। अब ठीक है।

**हेतल**– एक दम ठीक है।

**आलोक**– (तैयार होते हुए आवाज लगाते हैं) विजया फ्रूट शेक बन गया।

**विजया**– ये लीजिए आपका शेक भी तैयार है।

**प्रांशु**– पिताजी! ये क्या पी रहे हो?

**आलोक**– अरे! ये तुम्हारे पसंद का नहीं है।

**प्रांशु**– लेकिन नाम तो बता दीजिए।

**आलोक**– अरे भई! तुम्हें दूध पीने से चिढ़ है, और ये दूध से बना है। अब तुम्हारे पसंद की चीज है ही नहीं तो तुम उसका नाम जानकर क्या करोगे।

**प्रांशु**– पाना इसका नाम बता भी दो ना।

**हेतल**– पिताजी! इसे थोड़ा–सा चखने के लिए दीजिए। शायद प्रांशु चखे और उसे पसंद आ जाये।

**आलोक**– लो प्रांशु! इसे पीकर देखो और बताओ कैसा इसका स्वाद है।

**प्रांशु**– (थोड़ा–सा शेक पीकर देखता है।) अरे वाह! इसका स्वाद तो अच्छा है। पिताजी अब मैं इसे पूरा पी जाऊँगा। (इतना कहते–कहते वह शेक समाप्त कर देता है।)

**हेतल**– पिताजी! ये श्रीमान तो पूरा शेक गटक गए। प्रांशु! आया ना मजा। अब ये लो दही पराठा खाकर देखो। (एक कौर अपने हाथ से प्रांशु को खिलाती है।)

**प्रांशु**– इसका स्वाद भी बहुत अच्छा है।

**आलोक**– अच्छा लगा ना! इसीलिए तो कहते हैं माँ का कहा मानो। माँ जो खाने पीने के लिए देती हैं वो सारी चीजें स्वाद के साथ–साथ सेहत के लिए भी उपयोगी होती हैं।

**हेतल**– प्रांशु! अब इरादा क्या है? माँ का कहा मानकर दूध पीओगे ना!

**प्रांशु**– दूध तो नहीं पीयूँगा। हाँ दही, और शेक अवश्य पी लूँगा।

**आलोक**– ठीक है ठीक है। खाली दूध न सही दूध से बने पदार्थ भी खा लोगे तो तुम्हारे शरीर की हड्डियाँ मजबूत हो जाएँगी। दूध के विकल्प के रूप में तुम दही, पनीर, और चीज जैसे दूध से बने पदार्थ ले सकते हो। कैल्शियम हमारी माँसपेशियों को गतिशील बनाने में भी सहायक होता है। (आलोक, हेतल और प्रांशु को बात करते देख विजया आकर पूछती है।)

**विजया**– अरे भाई! तीनों मिलकर क्या खिचड़ी पका रहे हो?

**हेतल**– कुछ नहीं माँ। पिताजी प्रांशु और मुझे समझा रहे थे दूध और दूध से बने पदार्थ के सेवन के बारे में।

**विजया**– प्रांशु और दूध दोनों का दूर-दूर तक वास्ता नहीं है।

**आलोक**– विजया! ये सब बातें अब पुरानी हुईं। अभी-अभी प्रांशु ने दूध के विकल्प के रूप में दही और फ्रूट शेक को पीकर देखा और दोनों ही चीजें उसे पसंद आईं।

**विजया**– अरे वाह! ये तो चमत्कार हो गया।

**प्रांशु**– माँ! आप ठीक ही कहती हैं मुझे रोज दूध पीना चाहिए। ओह! गलत बोल गया। दूध नहीं। अब कल से आप मुझे फलों में दूध डालकर शेक बनाकर दे दीजिएगा। मैं उसे झट से पी लूँगा आज की तरह।

**हेतल**– (चिढ़ाती है) नकलची बंदर- नकलची बंदर।

**प्रांशु**– (रुआँसा होते हुए) देखो ना पापा हेतल को, ये मुझे चिढ़ा रही है।

**आलोक**– हेतल! अब बंद करो प्रांशु को चिढ़ाना।

**विजया**– हेतल! तुम अपना नाश्ता समाप्त करो।

**हेतल**– माँ! वो तो प्रांशु ने खा लिया, आप मेरे लिए और बना दो।

**विजया**– बना तो दूँगी लेकिन तुम्हें पूरा खाना पड़ेगा।

**हेतल**– मैं तो माँ! हमेशा अपना नाश्ता समाप्त करती हूँ फिर आपने ऐसे क्यों कहा।

**विजया**– हूँ! नाश्ता तो समाप्त करती हो लेकिन भोजन में हरी सब्जी नहीं खाती हो। दाल से केवल प्रोटीन शरीर को मिलता है। बाकी पोषक तत्व भी तो शरीर के लिए उतने ही आवश्यक हैं। उनकी पूर्ति के लिए हरी सब्जियों को अपने भोजन में शामिल करना भी उतना ही जरूरी है जितना कि दूध पीना। लेकिन तुम हो कि....

**प्रांशु**– (बीच में बोल पड़ता है) माँ! मैं तो अच्छा और समझदार बच्चा हूँ ना! मैं भोजन में रोज–रोज सभी तरह की हरी सब्जी खाता हूँ।

**विजया**– (दोनों बच्चों को अपने पास बुलाकर दुलारते हुए कहती है।) तुम दोनों ही अच्छे और समझदार बच्चे हो। बस थोड़ी–सी बातों का ध्यान रखोगे तो तुम दोनों से अच्छा और बलवान बच्चा इस कॉलोनी में दूसरा नहीं होगा।

**आलोक**– (अचानक फोन पर बात समाप्त करते हुए।) अब आप लोगों की चर्चा समाप्त हो गई हो तो मैं कुछ कहूँ।

**विजया**– 'नेकी और पूछ–पूछ' कहो क्या कहना है?

**आलोक**– माँ–पिताजी का फोन आया है कि वे कुछ ही पलों में पहुँच रहे हैं। तभी दरवाजे पर घण्टी बजती है। (बच्चों से) देखो घण्टी बजी। जाओ, जाकर दरवाजा खोलो।

**विजया**– और सुनो नाना–नानी के चरण स्पर्श करना मत भूलना।

**प्रांशु–हेतल**– नहीं भूलेंगे माँ!

**आलोक**– (विजया से) आओ हम भी माँ–पिताजी के स्वागत के लिए बाहर चलें। (गेट पर नाना–नानी को पाकर बच्चे खुशी से गदगद हो जाते हैं।)

**विजया**– बच्चो! नाना–नानी को बाहर ही खड़ा रखोगे कि अंदर भी ले चलोगे। माँ–पिताजी अंदर चलिए। (नाना–नानी हेतल, प्रांशु आलोक सभी एक साथ घर में प्रवेश करते हैं।)

**आलोक**– विजया! फटाफट माँ–पिताजी के लिए चाय और नाश्ते का प्रबंध करो।

**प्रांशु**– (आश्चर्य से) चाय! नाना–नानी के लिए चाय और अभी–अभी तो आप दूध के लाभ बता रहे थे मुझे। क्या दूध की आवश्यकता बच्चों को ही होती है बड़ों को नहीं। (नाना–नानी की ओर देखकर प्रश्न करता है।)

**विजया**– (प्रांशु को चुप रहने का संकेत करती है।) प्रांशु तुम आज–कल बहुत अधिक बोलने लगे हो। चलो जाओ पढ़ाई करो।

**प्रांशु**– नहीं माँ! आज मैं नाना–नानी से जानकर ही रहूँगा।

**आलोक**– प्रांशु! माँ ने कहा ना पढ़ाई करो। तो जाओ यहाँ से।

**नाना**– अरे भाई! बात क्या है कोई हमें भी बतायेगा?

**विजया**– कुछ नहीं। ये प्रांशु है न! बहुत नखरा करता है और दूध नहीं पीता है। इसीलिए मैंने उसे दूध के लाभ बताए। ताकि वह आकर्षित होकर दूध पीना प्रारंभ कर दे।

**नानी**– प्रांशु! ये मैं क्या सुन रही हूँ।

**प्रांशु**– नानी! मैं तो बस इतना जानता हूँ कि दूध बहुत अच्छा होता है, तो आप और नाना चाय क्यों पीते हैं।

**नाना**– विजया! बात तो प्रांशु ने पते की कही है।

**नानी**– और उसकी चिंता भी सही है।

**विजया**– माँ! अब इसे कौन समझाये ये तो जिद कर बैठा है, और कहता है कि आप सब लोग चाय छोड़कर दूध पीयो।

**नानी**– देखो बेटा! हमें वही बातें बच्चों को बतानी चाहिए, वही आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए जिसे हम बड़े, वास्तविक जीवन में कर सकें।

**नाना**– ठीक कहा विजया! तुम्हारी माँ ने। बच्चे अनुकरण करते हैं। हम आज और अभी से चाय पीना छोड़कर प्रांशु के साथ दूध पीयेंगे।

**नानी**– लो आज मैं भी चाय छोड़कर दूध पीना चाहती हूँ। अरे जल्दी दूध लाओ मुझे दूध पीना है।

**आलोक**– विजया! इस नेक काम में देरी कैसी। मैं भी माँ–पिताजी के साथ सहमत हूँ।

**विजया**– आप सबका आदेश 'सिर माथे पर'। फौरन लाई।

**नाना**– (प्रांशु से) अब तो सब तुम्हारी बात मान रहे हैं। कोई और समस्या हो तो बता दो।

**हेतल**– (प्रांशु को छेड़ती है।) फँस गए ना अपने ही जाल में।

**प्रांशु**– माँ! दूध ला दो पी लूँगा। (ये सुनकर सभी आपस में हँसते हैं।)

**हेतल**– वाह रे वाह! नाना–नानी के सामने बड़ा अच्छा बनने का प्रयास कर रहे हो।

**प्रांशु**– प्रयास नहीं मैं अच्छा ही हूँ।

**आलोक**– तुम दोनों फिर शुरू हो गए।

**विजया**– मैं अभी चाय लाई।

**नाना–नानी**– चाय नहीं बिटिया! आज से हम भी दूध पीएँगे।

(सभी आपस में मिलकर हँसते और गाते हैं।)

दूध पीते जाना जी
मसल्स को बनाना जी
दही खाते जाना जी
स्वाद बढ़ाना जी

दूध न जिसे सुहाता जी
शेक उसे है भाता जी
पनीर है स्वाद बढ़ाता जी
चीज डालकर खाता जी

प्रांशु पीता गट–गट–गट
हेतल पीती झट–पट–झट
नाना दौड़ लगाते फट
नानी पीछे आती झट

अम्मा खुश हो जाती जी
बाबा को बताती जी
देह को पुष्ट बनाती जी
चुस्ती–फुर्ती लाती जी

दूध पीते जाना जी.....

(पर्दा गिरता है।)

– भोपाल (म. प्र.)

# मैं कर सकती हूँ

– रजनीकांत शुक्ल

२६ दिसम्बर 'वीर बाल दिवस' के रूप में मनाया जाता है और यह गुरु गोविन्द सिंह जी के पुत्रों के बलिदान को याद करने का दिन है। इस दिन इन युवा नायकों के अदम्य साहस त्याग और वीरता को याद किया जाता है।

इस दिन प्रति वर्ष देश के विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण प्रतिभा सम्पन्न बच्चों को देश की राष्ट्रपति महोदया बच्चों को दिए जाने वाले देश के सबसे बड़े पुरस्कार 'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार' से सम्मानित करती हैं। जिनका देश भर के बच्चों के बीच से केन्द्रीय महिला बाल विकास मंत्रालय चुनाव करता है। २६ दिसम्बर वर्ष २०२५ को जिन बीस बच्चों को यह पुरस्कार दिया गया। इनमें सिरसा हरियाणा की सत्तरह वर्ष की प्रतिभाशाली खिलाड़ी 'पैरा एथलीट' ज्योति भी हैं।

सिरसा जिले के एलनाबाद क्षेत्र की रहने वाली ज्योति के पिता विजयपाल वाहन चलाने का काम करते हैं। जन्म से ही ज्योति का एक पैर छोटा जिसमें घुटना नहीं था और वह घुटने से कुछ नीचे तक था। वे बैसाखी के सहारे या जमीन पर घिसट-घिसट कर चलती थीं। इसे विज्ञान की भाषा में लोकॉमोटर डिसेबिलिटी कहा जाता है। इसके कारण उन्हें बचपन से ही बहुत परेशानी होती थी।

देखने वाले लोग कहते कि यह बेचारी लड़की अपने जीवन में भला क्या कर पाएगी? यह सुनकर ज्योति के मन में संकल्प मजबूत होता और वह मन ही मन सोचती कि अवसर मिला तो मैं कुछ करके दिखा दूँगी।

सचमुच मन से मजबूत ज्योति ने अपनी इस शारीरिक चुनौती को कभी अपने संकल्प की राह में बाधा नहीं बनने दिया। और दुनिया को दिखा दिया कि मैं कुछ नहीं बहुत कुछ कर सकती हूँ।

वे सिरसा के ओढ़ा गाँव में स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय में पढ़ीं। जहाँ उनका प्रवेश हो गया था। जहाँ के अच्छे माहौल ने ज्योति को आगे बढ़ने के अवसर प्रदान किए। ज्योति की बचपन से ही खेलकूद में रुचि थी। हालाँकि उन्हें चलने में कठिनाई का सामना करना पड़ता था फिर भी उन्होंने मिले अपने कृत्रिम पैर के माध्यम से लगातार अभ्यास करना जारी रखा। जिससे पैरा एथलेटिक्स के क्षेत्र में ज्योति को लोग पहचानने लगे।

कहते भी हैं लगातार अभ्यास से तो पत्थर पर निशान पड़ जाते हैं। ज्योति स्वयं को बेहतर से और बेहतर बनाने के प्रयास में निरंतर लगी रही। परिणाम यह हुआ कि ज्योति की लगन और उनके प्रदर्शन को देखकर उन्हें अप्रैल २०२२ में विशेष बच्चों के लिए आदित्य मेहता फाउंडेशन के द्वारा शाला में लगाए गए एक बृहद खेल प्रशिक्षण शिविर में चुन लिया गया।

बहुत सारे खेलों में से ज्योति को पैरा एथलीट खेलों के लिए चुना गया। तब वे आठवीं कक्षा की छात्रा थीं। उन्हें हैदराबाद में उत्कृष्ट कोच के साथ अच्छे उपकरण और अनुशासित प्रशिक्षण लेने का अवसर मिला तो उनकी प्रतिभा में निखार आता चला गया।

कहा जाता है सौभाग्य हर किसी का दरवाजा जीवन में एक न एक बार अवश्य खटखटाता है। जो

इसे समझ कर आगे बढ़कर खोलता है वही उपलब्धि को पा जाता है। ज्योति के जीवन के लिए भी यह विशेष प्रशिक्षण शिविर ऐसा ही वरदान बनकर आया। जिसने उनके जीवन की दिशा को बदल दिया। इसके बाद तो उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

दिसम्बर २०२३ में जब हरियाणा के रोहतक में राज्यस्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ तो ज्योति ने प्रशिक्षण से प्राप्त अपने समस्त कौशल को झोंक दिया परिणाम यह हुआ कि उन्होंने सबको पीछे छोड़ते हुए शाटपुट और जैवलिन थ्रो में स्वर्ण पदक पर कब्जा जमा लिया। इन राज्य प्रतियोगिता में सर्वोच्च पुरस्कारों के मिलने से उनका हौसला बहुत बढ़ गया अब उन्होंने दूने उत्साह के साथ राष्ट्रीय खेलों की तैयारियाँ शुरू कर दीं।

गुजरात में आयोजित हुई १२वीं राष्ट्रीय पैरा एथलेटिक्स चैम्पियनशिप प्रतियोगिताओं २०२३ में उन्होंने सत्रह वर्ष से कम आयु वर्ग में शाटपुट के स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया जबकि जैवलिन थ्रो यानी कि भाला फेंक में रजत और डिस्कस थ्रो में कांस्य से संतोष करना पड़ा। पहली बार में राष्ट्रीय स्तर पर पायी गई ये उपलब्धियाँ कम नहीं थीं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर थाईलैंड में आयोजित हुई विश्व एबिलिटी खेल प्रतियोगिता २०२३ में उन्होंने दो रजत पदक और एक कांस्य पदक प्राप्त कर दुनिया में भारत के नाम को ऊँचा किया।

वर्ष २०२४ में बैंगलुरू आयोजित हुए १३वें राष्ट्रीय जूनियर और सब जूनियर पैरा एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में १७ वर्ष से कम आयु वर्ग के शाटपुट और डिस्कस थ्रो खेलों में ज्योति ने इसमें रजत पदक जीतकर अपनी क्षमताओं को एक बार प्रमाणित किया।

ज्योति ने वर्ष २०२५ में दुबई में होने वाले यूथ एशियन खेलों में भी भाग लिया। वहाँ भी अपने प्रदर्शन के बल पर उन्होंने अपने आयु वर्ग में एशिया में तीसरी रैंक अर्जित की।

आमतौर पर किसी भी खिलाड़ी की किसी एक खेल में दक्षता हासिल होती है। किन्तु ज्योति ने अपनी लोकॉमोटर डिसेबिलिटी के बावजूद अपनी अदम्य प्रतिभा की बदौलत एक नहीं बल्कि तीन-तीन खेलों शाटपुट, डिस्कस थ्रो यानि चक्का फेंक और भाला फेंक जैसे खेलों में अंतरराष्ट्रीय स्तर तक कुल पन्द्रह प्रतिष्ठित पदक अर्जित किए। जिनमें पाँच स्वर्ण पदक थे। ज्योति की इस स्वर्णिम सफलता ने सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया।

खेल के क्षेत्र में ज्योति के इन उत्कृष्ट प्रदर्शनों और अदम्य साहस उनकी लगन और प्रेरणादायी संघर्ष को देखते हुए उनके नाम का चयन बच्चों को दिए जाने वाले देश के इस सर्वोच्च पुरस्कार के लिए चुना लिया गया।

ज्योति को मिले इस राष्ट्रीय पुरस्कार के अवसर पर उनके पिता बहुत खुश हुए और बोले कि मैंने जब पहली बार ज्योति ने स्वर्ण पदक अर्जित किया था तभी जान दिया था कि ज्योति बहुत आगे तक जाएगी। आज मेरा वर्षों पहले का देखा हुआ सपना साकार हो गया है।

ज्योति का कहना है- डिसेबल बच्चों में अद्वितीय क्षमताएँ और असीम संभावनाएँ होती हैं। उचित मार्गदर्शन और सहयोग मिलने पर वे सामान्य बच्चों से भी आगे निकल कर समाज में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित कर रहे हैं। उन्हें बेचारा न समझें। उन्हें समान अवसर व स्वीकृति दें और उनकी सफलताओं पर उन्हें प्रोत्साहित करें।

नन्हे मित्रो!

**कमजोरी हथियार बना लो जुटो निरन्तर श्रम में।**
**एक सा रखो खुद को तुम खुशियाँ हों या गम में।।**
**न हो रोशनी में उद्वेलित, मत निराश हो तम में।**
**राहो प्रकृति के साथ गुजारा करो अपना कम में।**

**- दिल्ली**

कहानी

# चिड़िया का घोंसला

– डॉ. प्रभा पंत

''माँ! मुझे पानी रखने के लिए दो पॉट मँगा दो प्लीज।'' घर के भीतर पैर रखते ही पीहू ने कहा।

''बिटिया! पहले कंधे से बस्ता उतारकर थोड़ा सुस्ता लो... क्या करोगी पॉट से...? तुम्हारे पास गिलास है, बॉटल है... और जग भी तो है। अब तुम्हें दो और पॉट क्यों चाहिए?'' पीहू की माँ ने उसके कन्धे से बस्ता उतारने में सहायता करते हुए, उत्सुकता से पूछा।

''माँ! मुझे पॉट अपने लिए नहीं, चिड़िया और डॉगी के लिए चाहिए; उन्हें भी तो प्यास लगती है न... मुझे उनके लिए पानी भरकर रखना है।''

''अरे वाह! आज तो हमारी पीहू को कुत्ते और चिड़िया की भी चिंता हो रही है, लेकिन बेटी! तुम्हारे दिमाग में अचानक यह बात आई कहाँ से।'' कहते हुए, माँ ने पीहू के हाथ में शरबत का गिलास थमा दिया।

पीहू को बुरूँश का शरबत बहुत पसंद था, उसने झटपट शरबत पिया, और गिलास को टेबिल पर रखती हुई बोली, ''अचानक नहीं माँ! हमारी शिक्षिका हमें हर दिन पेड़-पौनों, नदी, पहाड़, समुद्र और पशु-पक्षियों के बारे में बताती रहती हैं। आज उन्होंने बताया, लोग किस तरह अपने लाभ के लिए पेड़ काटते जा रहे हैं। अगर मनुष्य जीव-जंतुओं और पर्यावरण के बारे में सोचे-समझे बिना इसी तरह जंगल उजाड़ता रहा, तो धीरे-धीरे वहाँ रहने वाले प्राणियों की प्रजातियाँ समाप्त होती जाएँगी।''

शिक्षिका की बात बताते-बताते अचानक बीच में रुककर पीहू ने पूछा, ''माँ! पर मुझे यह समझ नहीं आया, लाभ किसे कहते हैं?''

पीहू की माँ बहुत देर से इस पल की प्रतीक्षा कर रही थी कि पीहू की बात पूरी हो, और वह उससे कपड़े बदलकर भोजन करने के लिए कह सके।

जैसे ही पीहू ने प्रश्न किया, तो वह मुस्कराती हुई झट से बोली- ''जैसे तुम्हारे प्रश्न पूछने से मुझे यह लाभ हुआ कि अब मैं तुम्हारे कपड़े बदलवाकर, तुम्हें भोजन करवा सकती हूँ।'' यह कहते हुए माँ ने पीहू की शाला का गणवेश उतारकर, उसे घर के कपड़े पहना दिए, और बोली, ''अब तुम अपने हाथ-पैर धोकर आओ, तब तक मैं भोजन परोसती हूँ। उसके बाद हम भोजन करेंगे और....।''

''मैं समझ गया माँ, आप चाहती हैं, हम भोजन करने के बाद आराम से बैठकर बातें करेंगे।'' कहकर, पीहू मुस्कराती हुई बाथरूम की ओर चली गयी। माँ और बेटी ने भोजन किया, उसके बाद दोनों ने जूठे बर्तन उठाकर रसोईघर में रखे। जब उसकी माँ बर्तन माँजने लगी, तो वह सहायता करने के लिए रसोईघर को सँवारने में जुट गई। जैसे ही वह धुले बर्तनों को उठाने के लिए झुकी, तो माँ ने कहा, ''पीहू! अभी बर्तन गीले हैं, इनमें से पानी निथरने दो... बाद में इन्हें पोंछकर रख देना। तब तक तुम मुझे बताओ, आज तुम्हारी शिक्षिका ने और क्या-क्या बताया।''

पीहू माँ के समीप आकर खड़ी हो गई और बोली, उन्होंने यह भी बताया कि ''अब शहर के आस-पास के उपजाऊ खेतों, फल के बागों में भी बड़े-बड़े मकान, मोबाइल टॉवर, और ऊँची-ऊँची इमारतें, बनती जा रही हैं; इससे पशु-पक्षियों को और भी अधिक दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। उन्हें न पानी मिल रहा है, न हरा चारा, न फल, न अनाज, और न कीट-पतंगे... बेचारे अपना दु:ख-दर्द, परेशानी किसी से कह भी नहीं पाते।''

पता है माँ! इसलिए मैंने सोचा, अब मैं अपने घर की छत पर उनके पीने के लिए एक पॉट में पानी रखा करूँगी, और दूसरे में खाना भी...''माँ! क्या हम चिड़ियों के लिए घर भी बना सकते हैं?'' पीहू ने जिज्ञासा व्यक्त की।

''हाँ, हम उनके लिए घोंसले तो बना सकते हैं; लेकिन उन्हें हमारे बनाए घर पसंद आएँगे, या नहीं.... यह तो बनाने के बाद ही पता चलेगा।''

''क्यों माँ? क्या पंछी हमें प्यार नहीं करते?''

''प्यार करते हैं, पर उन्हें बंद पिंजरे में रहना अच्छा नहीं लगता... हमारी तरह वह भी स्वतंत्र रहना चाहते हैं।''

''तो फिर चिड़िया कहाँ रहेगी?'' पीहू ने उदास होकर पूछा।

''अपने घोंसले में।''

माँ ने मुस्कराकर कहा, और बर्तन माँजकर रसोईघर से बाहर आ गई। पीहू भी माँ के पीछे-पीछे इस कमरे से उस कमरे में अन्दर-बाहर जाती हुई, बातें करती रही। उसने उत्सुक होकर पूछा, ''घोंसले में... पर वह घोंसला कहाँ बनाएँगी?''

''जब हमारे घर के आँगन में लगा पेड़ बड़ा हो जाएगा... उस पर।'' ''और तब तक?'' पीहू ने उदास स्वर में पूछा।

तब तक हम चिड़िया की आवश्यकता और पसंद के अनुसार उसके लिए घोंसला बनवाएँगे और उसे ऐसे स्थान पर रखेंगे, जहाँ उसके अंडे और बच्चे कुत्ते, बिल्ली, चील, कौए, साँप और शरारती बच्चों की पहुँच से दूर रह सकें।'' माँ ने मुस्कराकर कहा।

पीहू पंछी की तरह चहचहाकर बोली- ''सच माँ!'' खुशी से उसका चेहरा चमक उठा। अपनी बेटी की संवेदनशीलता, औरों के प्रति प्रेम एवं सहानुभूति देखकर, माँ ने रीझकर उसे अपने गले से लगा लिया।

**- हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)**

कहानी

# सेल्फी

– नीरज कुमार मिश्रा

सुंदरवन जंगल में उस दिन बड़ी हलचल थी, शहर से लौटे मोंटू बंदर के हाथ में एक चमचमाता मोबाइल था।

''वाह! यह क्या है?'' खरगोश चिंकू ने पूछा।

मोंटू ने गर्व से कहा– ''यह मोबाइल है, इससे फोन तो होता ही है इसके अलावा फोटो खींचते हैं, वीडियो बनाते हैं और सबसे मजेदार चीज–सेल्फी लेते हैं।''

''सेल्फी?'' सभी जानवरों ने एक साथ पूछा।

मोंटू ने मोबाइल सामने किया, मुस्कुराया और क्लिक! ''देखो, यह मेरी फोटो!''

सभी जानवर हैरान रह गए।

अगले ही दिन जंगल में सेल्फी का बुखार फैल गया हाथी दादा अपनी सूंड उठाकर सेल्फी लेते, हीरू हिरण अपने सींग दिखाकर फोटो खिंचवाते और बिल्लू भालू हर शहद के छत्ते के साथ तस्वीर खिंचवाता।

कुछ ही दिनों में जंगल का हर जानवर सेल्फी का दीवाना हो गया।

यह खबर राजा शेर सिंह तक भी पहुँची। राजा शेरसिंह को अपनी शान पर बड़ा गर्व था, उन्होंने सोचा– ''जब सभी सेल्फी ले रहे हैं तो मेरी सेल्फी सबसे शानदार होनी चाहिए।''

उन्होंने तुरंत सभा बुलाई। ''सुनो जंगल वासियों!'' शेर राजा दहाड़े– ''आज से जंगल में 'महान सेल्फी चैलेंज' शुरू होता है जिसकी सेल्फी सबसे शानदार होगी, उसे मिलेगा स्वर्णकप का पुरस्कार!''

बंदर खुशी से उछल पड़े। बाकी सभी तालियाँ बजाने लगे। बिल्लू भालू ने तो उसी समय दस तरह के पोज की प्रैक्टिस शुरू कर दी।

अगले दिन से प्रतियोगिता शुरू हो गई। तितलियाँ झरने के पास सेल्फी ले रहा थी तो कोई पहाड़ी पर चढ़कर फोटो खींच रहा था मोंटू बंदर तो एक पेड़ की सबसे ऊँची और पतली डाल पर चढ़ गया।

''देखो मेरी बहादुरी!'' उसने कहा। क्लिक! लेकिन फोटो लेते समय उसका संतुलन बिगड़ गया। धड़ाम! वह नीचे झाड़ियों में गिर पड़ा। सौभाग्य से उसे अधिक चोट नहीं आई फिर भी किसी ने सबक नहीं सीखा। अब तो प्रतियोगिता और कठिन और रोमांचक हो गई थी।

भालू ने मधुमक्खियों के छत्ते के सामने सेल्फी लेने की सोची ''यह फोटो सबसे अलग होगी!''

जैसे ही उसने पोज बनाया, मधुमक्खियाँ डर गईं और थोड़ा नाराज भी हो गईं। कुछ ही सेकंड में भालू भागता नजर आया और मधुमक्खियाँ उसके पीछे थीं। जंगल में ठहाके गूँज उठे। उधर हिरण सोनू नदी किनारे सेल्फी ले रहा था, फोटो में अच्छा दिखने के चक्कर में वह पीछे हटता गया और फिसलकर पानी में गिर पड़ा। अब भी किसी को समझ नहीं आ रहा था कि मामला आवश्यकता से अधिक बढ़ चुका है। कुछ दिनों बाद एक बड़ी घटना हुई। दोपहर का समय था जंगल के एक भाग में सूखी घास में आग लग गई। धुआँ उठने लगा।

सबसे पहले तोता टिंकू ने आग देखी। वह जोर-जोर से चिल्लाया- ''आग! आग! जंगल में आग लग गई।'' लेकिन आश्चर्य की बात थी कि कई जानवर उसकी बात सुन ही नहीं रहे थे। कोई मोबाइल में फोटो देख रहा था।

कोई नई सेल्फी लेने में व्यस्त था। कोई अपनी इंटरनेट पर डाली गई तस्वीरों पर टिप्पणियाँ पढ़ रहा था। तब तक आग फैलने लगी। अब जानवर घबराए।

शेर राजा ने तुरंत आदेश दिया- ''सभी जानवर नदी से पानी लाओ!'' हाथी दादा सूँड में पानी भरकर लाए। भालू और हिरण मिट्टी डालने लगे। बंदर पेड़ों से सूखी टहनियाँ हटाने लगे। कई घंटों की मेहनत के बाद आग पर काबू पाया जा सका।

शाम को शेर राजा ने सभा बुलाई। इस बार उनका चेहरा गंभीर था। उन्होंने कहा- ''आज हम सब बड़ी मुसीबत में पड़ सकते थे।'' सभी जानवर चुप थे।

प्रोफेसर गिल्लू गैंडा ने कहा- ''सेल्फी लेना बुरी बात नहीं है। लेकिन जब हम किसी शौक को अपनी जिम्मेदारियों से बड़ा बना देते हैं, तब समस्या शुरू होती है।''

हाथी दादा बोले- ''हमने खेलना, दौड़ना, मित्रों से बातें करना और आसपास ध्यान देना छोड़ दिया था।''

मोंटू बंदर ने सिर झुका लिया। ''सच है मैं तो हर समय फोटो खींचने के बारे में ही सोचता रहता था।''

भालू बोला- ''और मैं शहद खाने से अधिक उसकी फोटो खींचने में व्यस्त था।'' सभी हँस पड़े।

तब शेर राजा खड़े हुए। उन्होंने घोषणा की- ''सेल्फी चैलेंज समाप्त किया जाता है।'' जानवर उदास हो गए। लेकिन शेर राजा मुस्कुराए।

''फोटो खींचना बंद नहीं होगा। लेकिन अब केवल विशेष अवसरों पर बाकी समय हम अपने असली जीवन का आनंद लेंगे।''

सभी ने खुशी-खुशी यह नियम मान लिया। धीरे-धीरे जंगल पहले जैसा हो गया। बंदर फिर पेड़ों पर झूलने लगे। हिरण मैदानों में दौड़ने लगे। भालू शहद ढूँढ़ने लगा।

और जब कभी कोई विशेष अवसर आता, तो सभी मिलकर एक समूह-सेल्फी अवश्य लेते। लेकिन अब वे जानते थे कि तस्वीरें यादों के लिए होती हैं, जिंदगी की जगह लेने के लिए नहीं।

**- पलिया कलां (उ. प्र.)**

# भीष्मजी का प्राण त्याग और गंगाजी का पुत्र शोक

– मोहनलाल जोशी

भीष्म जी ने युधिष्ठिर को धर्म और राजनीति का उपदेश दिया। फिर उन्होंने कृष्ण से कहा– ''अब मैं प्राणों का त्याग करना चाहता हूँ।''

श्रीकृष्ण ने कहा– ''आपने कोई भी पाप नहीं किया है। आप वसुलोक चले जाइये।''

भीष्मजी दो घड़ी शांत रहे। फिर योग–विद्या द्वारा प्राण छोड़ने लगे। उनके प्राण सिर की तरफ चढ़ने लगे। जहाँ से प्राण निकल जाते, वहाँ लगा हुआ तीर (बाण) भी निकल जाता था। घाव अपने आप भर जाता था।

श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर आश्चर्य से देख रहे थे। बाद में उन्होंने कपाल से प्राणों का त्याग कर दिया। तभी आकाश से दिव्य पुष्पों की वर्षा हुई। पाण्डवों ने उनका अग्नि–संस्कार किया।

तभी भागीरथी जल के ऊपर प्रकट हुई। वह पुत्र भीष्म के मारे जाने पर विलाप कर रही थी। श्रीकृष्ण ने उन्हें साँत्वना दी। तब वह पुन: गंगा नदी में अन्तर्धान हो गई।

## युधिष्ठिर जी का स्वर्गारोहण

युधिष्ठिर ने अनेक वर्षों तक शासन किया। फिर श्रीकृष्ण से अनुमति लेकर स्वर्ग जाने की तैयारी की। सबसे पहले वे पूर्व दिशा की और चले। उनके साथ चारों भाई व द्रौपदी थी। एक कुत्ता भी उनके साथ चल रहा था।

चलते–चलते द्रौपदी मार्ग में गिर गई। युधिष्ठिर ने कहा– ''द्रौपदी अर्जुन के लिये पक्षपात करती थी। इसका पुण्य क्षीण हो गया है। वे उसे छोड़कर आगे बढ़ गये। फिर मार्ग में अर्जुन गिर गया।

युधिष्ठिर ने कहा– अर्जुन को अपनी शूरता का अभिमान था।

युधिष्ठिर ने पृथ्वीलोक की परिक्रमा की। फिर वे उत्तर दिशा की ओर बढ़ गए। उनके सभी भाई रास्ते में ही गिर गये थे। केवल एक कुत्ता उनके साथ था। तब देवराज इन्द्र रथ लेकर आये।

इन्द्र ने युधिष्ठिर को कहा– आप रथ में बैठ जाइए। आपके सभी भाई और द्रौपदी पहले ही स्वर्ग–लोक पहुँच गये हैं। युधिष्ठिरजी इन्द्र के साथ सदेह स्वर्ग–लोक चले गए।

– बाड़मेर
(राजस्थान)

# उपदेश

चित्रकथा-

महात्मा जी रोज उपदेश देते और अंत में यह कहना नहीं भूलते -

..भद्रजनो! कल उपदेश सुनने आते समय एक मुट्ठी चावल और एक रूपया जरूर लाएं..

दगडू रोज महात्मा जी का उपदेश सुनने आता, उपदेश बड़े सारपूर्ण और दिशादर्शक होते थे -

एक दिन उसने महात्मा जी से कहा -

महाराज.. एक तरफ तो आप जीवन और सत्य की बड़ी बड़ी बातें करते हैं ...

..दूसरी तरफ उपदेश के बाद एक रूपया और एक मुट्ठी चावल मांगते हैं..ऐसा क्यों?

महात्मा जी बोले -

अरे शिष्य! मुझे अगले दिन उपदेश देने के लिए जिन्दा भी तो रहना है..

प्रेरक-प्रसंग गाँधी जयंती : २ अक्टूबर

# अपनी जिम्मेदारी से न बचें

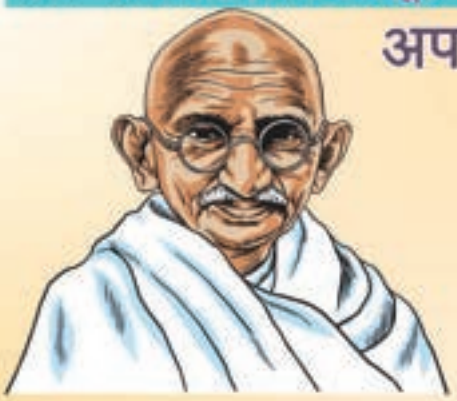

स्वच्छता के प्रति गाँधीजी के आग्रह की कोई सीमा नहीं थी। गेहूँ आदि वह अपने आप साफ करते थे। उसी प्रकार मल पर मिट्टी डालकर उसे गाड़ देने की व्यवस्था आश्रम में थी। यह काम भी वह उसी सहज भाव से करते थे। दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कहीं उनका ध्यान सफाई पर रहता था। देश और विश्व की जटिल समस्याओं में लगे रहने पर भी वह इस क्षेत्र में कभी नहीं चूके।

एक दिन वह भोजन करने के लिए बैठे थे। प्रभुदास और देवदास दोनों बर्तन आदि साफ करके खेलने की तैयारी में थे कि सहसा गाँधीजी ने देवदास को पुकारा- ''देवा! इधर आ।''

देवदास ने उत्तर दिया- ''जी हाँ।''

गाँधीजी बोले- ''क्या तुमने देखा कि जहाँ तुमने बर्तन साफ किए थे, वहाँ एक कढ़ाई थी। उसके पास किसी ने खाते समय दाल और चावल डाल दिए थे। उन्हें तुमने क्यों नहीं साफ किया?''

देवदास ने उत्तर दिया- ''वे हमने नहीं डाले थे।''

गाँधीजी ने तुरंत कहा- ''तुमने नहीं डाले तो क्या हुआ? जब सफाई करना तुम्हारा काम है तो तुम्हें देखना चाहिए था कि दाल और चावल वहाँ क्यों पड़े रह गए हैं?''

कहना न होगा कि खेलना छोड़कर देवदास को पहले वह काम करना पड़ा।

कविता

# रसगुल्ले का स्वाद

- महेंद्र कुमार वर्मा

कड़क जलेबी खाइये, बड़े सवेरे मीत,
साथ समोसे हों अगर, बढ़ जाएगी प्रीत।

मुझको भैया जब मिला, रसगुल्ले का स्वाद,
हलवाई काका मुझे, बरबस आए याद।

पेड़े मथुरा के मिले, जब भी मुझको यार,
मेरे मुख ने पा लिया, खुशियों का संसार।

छेने के चमचम मिले, जब मुझको उपहार,
बंगाली मिठान पे, मुझको आया प्यार।

लिट्टी चोखा खा रहा, सारा हिंदुस्थान,
ये बिहार की देन है, ये बिहार की शान।

- भोपाल (म. प्र.)

कविता

# दशानन को जलाएँ

– माणकचन्द गहलोत

अहंकार स्वरूप राक्षस को मारे,
नम्रता हम सब अपनाएँ,
आओ, ऐसे दशानन को जलाएँ।

ईर्ष्या–घृणा के पिशाच छोड़कर,
आपस में मिल खुशियाँ मनाएँ,
आओ, ऐसे दशानन को जलाएँ।

राग–द्वेष का राक्षस भूलकर,
प्रेम–प्यार का दीप जगाएँ,
आओ, ऐसे दशानन को जलाएँ।

अशिक्षा स्वरूप रावण को मिटाकर,
साक्षरता को गले से लगाएँ,
आओ, ऐसे दशानन को जलाएँ।

बड़ों –वरिष्ठों का माने कहना,
गुरुजनों का मान–सम्मान बढ़ाएँ,
आओ, ऐसे दशानन को जलाएँ।

– नागौर (राजस्थान)

प्रेरक–प्रसंग शास्त्री जयंती : २ अक्टूबर

# सादगी और नम्रता

प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री एक बार कहीं जा रहे थे। उनकी कार, चने के खेत के पास से गुजरी। उनकी इच्छा ताजे चने खाने की हुई। तुरन्त उनके सहायक चने तोड़ने के लिए चल पड़े।

शास्त्रीजी ने उन्हें रोककर पूछा– ''क्या आपने चने तोड़ने की स्वीकृति, खेत के स्वामी से ले ली है?'' वे बोले– ''सर! स्वीकृति तो नहीं ली। फिर भला, आपके लिए इसकी आवश्यकता ही क्या है?''

कभी क्रोधित न होने वाले शास्त्री जी, थोड़ा 'आवेश' में बोले– ''नहीं! बिना स्वामी की आज्ञा के कोई भी चने तोड़कर नहीं लाएगा। बिना स्वीकृति के किसी की वस्तु लेना अपराध है।''

सकपकाए हुए सहायक खेत के स्वामी को ढूँढ़ने पहुँचे और उसे सारी बात बताई। चकित किसान ने कई पौधे उखाड़े, भाव–विभोर उनके पास पहुँच कर बोला– ''आप जैसे देवता के दर्शन पाकर, आज मेरा जीवन धन्य हो गया।'' शास्त्री जी मुस्कुराए! फिर चने लेकर उसकी पीठ थपथपाई। वह ठगा–सा प्रधानमंत्री की सादगी और नम्रता देखता रह गया।

संकलन – शैवाल सत्यार्थी
ग्वालियर (म. प्र.)

# इस तरह बनाओ

## चमगादड़

# दो बातूनी

– दीपांशु जैन

एक गाँव में दो बातूनी आदमी रहा करते थे। दोनों की आँखें कमजोर थीं और वे दूर की चीजें साफ–साफ नहीं देख पाते थे। किन्तु दोनों यह मानने को तैयार नहीं थे कि वे नजर के कच्चे हैं। उल्टे दोनों एक–दूसरे पर अपनी निगाह की तेजी सिद्ध करने की कोशिश करते रहते थे।

एक दिन उन दोनों के सुनने में आया कि गाँव के चौराहे के बीच में जो प्रतिमा स्थापित की जाने वाली थी, वह बनकर तैयार हो गयी है और अगले दिन चौराहे के ऊँचे चबूतरे पर रख दी जाएगी।

उन दोनों ने तय किया कि इस अवसर पर वह एक–दूसरे की निगाहों की तेजी का इम्तहान लेंगे। तय हुआ कि मूर्ति रखे जाने के बाद वे चौराहे से दूर एक पेड़ पर बैठे–बैठे मूर्ति को ध्यान से देखेंगे। जो अधिक बारीकी से देख पाएगा, वह जीता हुआ माना जाएगा। शर्त पक्की कर ली गयी और वे विदा हुए।

शर्त तो हो गयी मगर दोनों के मन में चोर था। दोनों जानते थे कि दूर से उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं देगा, किन्तु कोई भी हारना नहीं चाहता था। अलग होकर दोनों को एक उपाय सूझा। वे एक–दूसरे से छिपकर उस शिल्पकार से मिल आए, जिसने मूर्ति बनाई थी।

दोनों ने शिल्पकार से मूर्ति के बारे में जानकारी ले ली, ताकि अगले दिन उसे दुहराकर दूसरे को नीचा दिखाया जा सके।

शिल्पकार को तो वास्तविकता का पता था

नहीं, इसलिए उसने एक को मूर्ति के मुँह और पेट के बारे में अधिक बताया और दूसरे को पीठ और पैरों के बारे में।

अगले दिन दोनों वादे के अनुसार चौराहे से दूर पेड़ पर चढ़कर बैठ गए। समय का अंदाजा कर उन्होंने अपना-अपना विवरण देना प्रारंभ कर दिया।

एक ने कहा- ''उसके गले में माला लटक रही है, जो सीने तक चली आती है। बीच में हीरा है।''

दूसरा चट से बोला- ''माला ? एक बच्चा है, जिसे लादकर वह खड़ी है।''

पहला बोला- ''ध्यान से देखो, माला है और हीरा।''

दूसरा बोला- ''तुम ध्यान से देखो, इतना बड़ा बच्चा नहीं देख पा रहे! बच्चे की आँखें बंद हैं।''

दोनों झगड़ने लगे। दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़े थे।

जब कुछ तय नहीं हो पाया तो उन्होंने उतावली में एक राहगीर को रोका। उसके पास पहुँचकर एक ने कहा- ''जरा बताइए तो वह मूर्ति है ना उसकी....।''

''जी हाँ! उस मूर्ति की...।'' दूसरा बीच ही में बोल पड़ा।

राहगीर ने अचरज से आँखें फैलाकर दोनों को देखा और सिर पर हाथ मार कर दोनों की बात काटते हुए बोला- ''मूर्ति... कैसी मूर्ति ? मूर्ति तो अभी तक रखी ही नहीं गयी है।''

इस तरह अचानक उनकी पोल खुल गई और स्वयं से लज्जित होते हुए वे घर लौट गये।

**- भवानीमण्डी**
**(राजस्थान)**

# पुस्तक विशेष

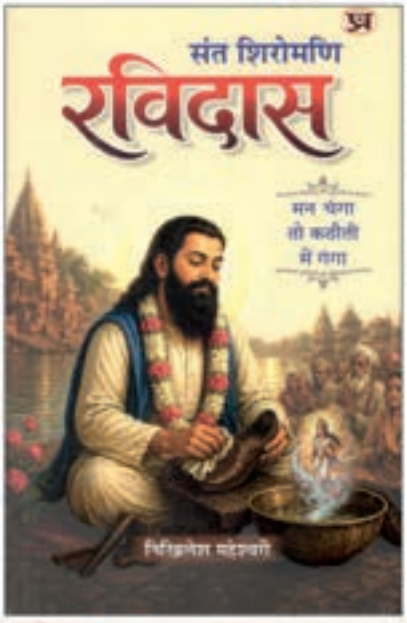


यह वर्ष **संत शिरोमणि रविदास जी** का ६५० वाँ जयंती वर्ष है। संत रविदास ने सम्पूर्ण समाज को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए समरसता साधना के लिए अतुलनीय कार्य किया है। उनके पावन चरित्र, जीवनी, प्रेरक प्रसंगों और प्रमुख रचनाओं (पदों) की अत्यन्त सरल, सुबोध, सारगर्भित और प्रेरक प्रस्तुति की है इस पुस्तक में विद्वान लेखक **श्री. निखिलेश महेश्वरी** ने। पुस्तक बच्चों-बड़ों सबके लिए अवश्य पठनीय है।

**पुस्तक का नाम-** संत शिरोमणि रविदास
**प्रकाशक-** प्रभात प्रकाशन प्रा. लि.
४/१९, आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-११०००२
**चलभाष-** ७८२७००७७७७

# पुस्तक परिचय

## मेरी पसन्द की बाल कहानियाँ

बाल जगत में कहानियाँ बच्चों की सर्वप्रिय विधा है। सदियों से कभी दादा-दादी, नाना-नानी या माँ-पिताजी से अथवा मित्र-मण्डली में बाल कहानियाँ अपने विविध रूपों में बच्चों को मनोरंजन और साथ ही साथ जीवन की शिक्षा भी देती रही है। मौखिक या वाचिक परम्परा शिथिल हुई तो उसकी पूर्ति का बीड़ा रचनाकारों ने उठाया और उनकी कलम बच्चों के लिए एक से बढ़कर एक नयापन लिए बाल कहानियाँ रचने लगीं।

प्रख्यात बाल साहित्य मर्मज्ञ विदुषी **डॉ. शकुंतला कालरा** ने अथक परिश्रम करके आपके लिए भारत के वर्तमान युग के दस श्रेष्ठ बाल कहानीकारों से उनकी अनेक कहानियों में से सर्वश्रेष्ठ और स्वयं की पसन्द वाली कहानियों का संकलन एवं संपादन कर मानो दस पुस्तकों का एक बाल कहानी का खजाना ही आपके लिए प्रस्तुत किया है। इनका प्रकाशन किया है **लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस लि.** ४६३७/२० हरि सदन एफ-५, प्रथम तल, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ (मो.) ९९११८६६२३९ ने और प्रत्येक पुस्तक का मूल्य है-२५०/- मात्र। इनमें है निम्नांकित लेखकों की कहानियाँ-

सर्वश्री प्रकाश मनु, डॉ. नागेश पांडेय 'संजय', पद्मा चौगाँवकर, दिविक रमेश, सुकीर्ति भटनागर, गोविन्द शर्मा, मंजुरानी जैन, रेनू सैनी, रेनू चौहान। **डॉ. शकुन्तला कालरा** की कहानियों की संपादक हैं **कुसुमलता सिंह**।

# दुद्धा का बलिदान

– इंजी. रघुराज सिंह कर्मयोगी

बच्चो, आज हम तुम्हें एक ऐसे वीर बालक की कहानी सुनाते हैं। जो उसके अदम्य साहस से भरी हुई है। यह अप्रतिम बलिदान की कहानी है।

मुगल सेनापति राजा मानसिंह ने चित्तौड़ पर चढ़ाई कर दी थी। उसके परिणाम स्वरूप महाराणा प्रताप को विस्थापित होना पड़ा।

उन दिनों वह पुंगा पहाड़ी के बीच एक बस्ती में रुके हुए थे। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था।

पत्ता भी खड़कता तो उपस्थिति अंकित कराने में पीछे नहीं रहता। महाराणा के खाने की व्यवस्था के लिए भील सरदारों ने एक नियम बना रखा था। जिसके अनुसार बस्ती के भील आदिवासी क्रमश: प्रतिदिन राणा प्रताप के लिए भोजन भिजवाते थे।

चित्तौड़ की सेवा करने में भील जातियाँ कभी पीछे नहीं रही हैं। उनकी तीरंदाज सेना ने भील सेनापति पूजा के नेतृत्व में हल्दीघाटी युद्ध में मुगलों के छक्के छुड़ा दिए थे।

बाद में इसी पूंजा भील को उनकी नेतृत्व क्षमता का सम्मान करते हुए महाराणा प्रताप ने राणा की उपाधि प्रदान की थी। इसके बाद वह पूंजा राणा के नाम से प्रसिद्ध हुए।

एक बार एक गरीब माँ के बेटे दुद्धा की बारी थी। कबीले में विषम परिस्थितियाँ थीं। उसके घर में अन्न का दाना तक नहीं था। परंतु देशभक्ति किसी भी कोण से कमजोर नहीं थी। दुद्धा की माँ पड़ोस से आटा माँग कर ले आई। रोटियाँ बनाकर दुद्धा को देते हुए बोली–

''दुद्धा! ये रोटियों की पोटली महाराणा को दे आ।''

''जी माँ सा! मैं अभी खाना देकर आता हूँ। ये गया और ये आया।'' दुद्धा ने खुशी–खुशी पोटली को हृदय से लगाया और हवा से बातें करता हुआ पहाड़ी रास्ते पर चल पड़ा। आगे चलकर घेराबंदी किए बैठे अकबर के सैनिकों को लड़का आता हुआ दिखाई दिया तो उन्होंने उसे रोका। एक सैनिक ने कड़क आवाज में पूछा–

''क्यों रे! इतनी तेजी से कहाँ भागा जा रहा है?''

दुद्धा ने जैसे उसकी आवाज सुनी ही न हो। बिना कोई उत्तर दिए उसने अपनी गति बढ़ा दी। सैनिक पकड़ने के लिए उसके पीछे भागा। लेकिन चपल, चंचल बालक का पीछा कर रहा जिरह बख्तर में कसा हुआ सैनिक पकड़ नहीं पाया।

सैनिक दौड़ते समय चट्टान से टकरा गया। क्रोध में भिनभिनाने लगा। सैनिक गिर पड़ा। उसने तलवार फेंककर दुद्धा पर वार किया। तलवार के धार से बालक की नन्ही कलाई कट गई।

दुद्धा ने एक पल को कटी हुई कलाई को देखा। रक्त की धार धरती पर उसके पद चिह्न बना रही थी। फिर भी वह रुका नहीं, दौड़ता रहा। आँखों में एक ही लक्ष्य था–

''राणा जी भूखे नहीं रहने चाहिए।'' उसका रक्त बह रहा था। लेकिन बालक का साहस देखिए। नीचे पड़ी रोटी की पोटली उसने दूसरे हाथ से उठाई और चल पड़ा। दुद्धा ने चाल तेज कर दी। राणा तक रोटियाँ पहुँचाने का उस पर जैसे एक जुनून सवार था।

''किसी भी विषम परिस्थिति में राणा जी को रोटियाँ पहुँचानी हैं।'' रक्त बहुत बह चुका था। दुद्धा की आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा।

फिर भी बिना कोई पल गँवाए वह दौड़ता रहा। इसके बाद जंगल की झाड़ियों में गायब हो गया। सैनिक आश्चर्यचकित रह गए कि कौन था यह बालक? जिस गुफा में राणा परिवार सहित रहते थे। वहाँ पहुँच कर दुद्धा मूर्छित होकर जमीन पर धड़ाम से गिर पड़ा।

राणा पहले तो कुछ समझ नहीं पाए। लेकिन दुद्धा के हाथ में रोटी की पोटली देखी तो सब कुछ समझ आ गया। उन्होंने उसका सिर अपनी गोद में ले लिया। पानी के छींटे मार कर उसे होश में लाए। टूटे शब्दों में उसने राणा जी से इतना ही कहा–

''राणा जी! यह रोटियाँ माँ ने भेजी हैं।'' दृढ़ प्रतिज्ञ और फौलादी तन वाले राणा की आँखों से आँसुओं की गंगा जमुना बहने लगी। हृदय पर पत्थर रख कर वह बोले–

''बेटा! तुम्हें इतने बड़े संकट में पड़ने की क्या आवश्यकता थी?'' इस पर वीरगति की तरफ बढ़ते हुए वीर दुद्धा ने उत्तर दिया। जो आज भी गोगुंदा की पहाड़ियों के इतिहास में गूँजता है–

''अन्नदाता, आप तो पूरे परिवार के साथ संकट में हैं। माँ कहती है आप चाहते तो अकबर से संधि कर, महलों में वैभवपूर्ण जीवन बिता सकते थे। परन्तु आपने ऐसा नहीं किया। अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए आपने महात्याग किया है। उसकी तुलना में मेरा त्याग कुछ भी नहीं है।'' इतना कहकर दुद्धा वीरगति को प्राप्त हो गया। राणाजी की आँखों में आँसू थे। मन में कहने लगे–

''धन्य है दुद्धा तू और तेरी देशभक्ति। अमर रहेगा, मेरे बच्चे! अमर रहेगा। तुझे जन्म देने वाली वीर माता को भी मैं प्रणाम करता हूँ। तेरे जैसे वीर बालकों के होते हुए मेवाड़ की धरती सदैव सुरक्षित रहेगी। इसकी तरफ कोई तिरछी नजर नहीं डाल सकता।'' नन्हा वीर बालक मेवाड़ की पावन गोद में सदैव के लिए चिर निद्रा में सो गया। उस दिन अरावली रो रही थी। वीर दुद्धा के बलिदान से प्रेरित होकर हमारी भविष्य की पीढ़ियाँ राष्ट्र रक्षा में अग्रिम पंक्ति में खड़ी दिखाई देंगी। ऐसा मेरा विश्वास है। जय जय मेवाड़ जय जय राजस्थान।

**– कोटा (राजस्थान)**

# बलिदान

लड़े देश के लिए वीर जो
रखते मातृभूमि का मान।
जिनने वारा देश पे जीवन
उन पर न्यौछावर कर प्राण।।
देश के आगे प्राण तुच्छ हैं
और विपत्तियाँ हैं आसान।
राणा का सम्मान बहुत है
दुद्धा पर हमको अभिमान।।
बलिदानों को भुला न देना
शोणित सींच खिला उद्यान।
रात गई तारों की बलि ले
आया रक्तिम तभी विहान।।
बलिदानों की परंपरा से
स्वतंत्रता का यह वरदान।
भारत माता की जय बोलो
बलिदानों के गाते गान।।

# शस्त्रपूजा का पर्व

बात १९१८ की है। एक नवयुवक डॉक्टर एम.बी.बी.एस. उत्तीर्ण कर कोलकाता से नागपुर लौटा था।

उस वर्ष अँग्रेजी शासन ने 'शांतिभंग की आशंका' की आड़ में विजयादशमी का पारम्परिक त्यौहार मनाने की निषेध-आज्ञा प्रसारित कर दी।

निषेधाज्ञा सुनकर उस युवक की भुजाएँ फड़क उठी उसने अपने साथियों से सिंह की भाँति गरजते हुए आह्वान किया ''अगर हम आज डर गए तो आने वाली १०० पीढ़ियाँ डरपोक बन जाएँगी। रावण को हराने वाले राम के वंशज डरते नहीं।''

सबको उत्साहित कर ३०-४० साथियों के साथ वह अखाड़े में जा पहुँचे। लाठी, तलवार, भाले इत्यादि जिसके पास जो शस्त्र थे उनका पूजन किया और एक शपथ ली।

**''हम तन से बलवान, मन से निडर और विचार से पवित्र बनेंगे। मातृभूमि की सेवा ही हमारा धर्म है।''**

शपथ लेकर सभी आनंदपूर्वक व्यायाम में व्यस्त हो गए।

यह समाचार पाकर पुलिस अधिकारी दौरा

चला आया डॉक्टर युवक ने निर्भीक स्वर में कहा– ''हम कोई कानून नहीं तोड़ रहे अपना त्यौहार मना रहे हैं। वह त्यौहार जो हमें सिखाता है कि अन्याय के आगे शीश न झुकाओ।''

पुलिस अधिकारी को अपनासा मुँह लिए लौटना पड़ा।

वे तेजस्वी और प्रचण्ड साहसी युवा डॉक्टर थे। डॉक्टर केशवराव बलिराम हेडगेवार जी जिन्होंने इस घटना के सात वर्ष बाद १९२५ विजयादशमी के ही दिन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की।

माथा-पच्ची

# मस्तिष्क का व्यायाम

– देवांशु वत्स

दोस्तो, बता सकते हो कि किनके बारे में बातें हो रही हैं?

उत्तर: तिलचट्टा डायनासोर के जमाने का है। मादा मच्छर महीने भर जीवित रहती है।

बौद्धिक क्रीडा

# दिमागी कसरत

– देवांशु वत्स

मित्रो! प्रत्येक चाबी की एक विशेष संख्या है। बाएँ से दाएँ और ऊपर से नीचे के उनकी संख्या का जोड़ रंगीन बक्से में लिखा है।

क्या तुम चाबियों की संख्या अनुमान लगा सकते हो?

साथ ही यह भी बताओ कि खाली स्थान में कौन सी संख्या आएगी?

उत्तर– का ४, का ६, का ९ और की संख्या ११ होगी। इस प्रकार प्रश्नचिह्न के स्थान पर २८ आएगा।

पुस्तक विशेष

## आओ बनें आदर्श विद्यार्थी

मूल्य ३०/-

प्रकाशन

ज्ञानगंगा प्रकाशन

बी–१९, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, पाँच बत्ती, जयपुर–३०२००१ (राजस्थान) दूरभाष–०१४१–२३७१५६३

बच्चो! आप सभी विद्यार्थी जीवन में हैं। एक अच्छे विद्यार्थी की क्या प्रेरणा हो? कौन आदर्श हो? उसमें क्या गुण अपेक्षित हैं? ऐसे सारे सोचने–विचारने और अनुकरण करने के बिन्दुओं को सरस कहानियों के माध्यम से आपके लिए संजोया है श्री. रविकुमार जी ने। आप लम्बे समय से शालेय शिक्षा के क्षेत्र में संलग्न लेखन, संपादन के अनुभवी व्यक्तित्व हैं।

# लाल बुझक्कड़ काका के कारनामे

–देवांशु वत्स

बौद्धिक क्रीडा

# भूल-भुलैया फ से फल

– चाँद मोहम्मद घोसी

खट्टे-मीठे फलों की खुशबू से चीकू खरगोश के मुँह में पानी आ गया। चीकू का मन फल खाने के लिए ललचा रहा है। फल चीकू से कुछ दूरी पर रखे हैं। भूल-भुलैया के कारण चीकू फलों तक पहुँचने में असमर्थ है।

प्रिय नन्हे-मुन्ने मित्रो! अब आप सही रास्ते से चीकू को फलों के पास पहुँचाइए।

– मेड़ता सिटी
(राजस्थान)

## अगला अंक विशेषांक

बच्चो! 'देवपुत्र' का नवम्बर अंक वन्देमातरम् के १५० वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर 'वन्देमातरम् भावयात्रा अंक' होगा।

पुरस्कार

# केसर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२६

वरिष्ठ समाज सेवी श्री. रमेश गुप्ता द्वारा स्थापित केशर पूरन स्मृति पुरस्कार हेतु अलग से कोई प्रविष्टि आमंत्रित नहीं की जाती बल्कि जनवरी २०२६ से दिसम्बर २०२६ के मध्य 'देवपुत्र' के 'पुस्तक परिचय' स्तंभ में परिचयार्थ प्रकाशित कृतियों में से किसी एक का चयन कर यह पुरस्कार दिया जाता है।

पुरस्कार न चाहने वाले लेखक अपनी कृतियाँ भेजते समय एक संक्षिप्त सूचना 'पुरस्कार के लिए नहीं केवल परिचय प्रकाशन हेतु' लिखित रूप में दे सकें तो उन कृतियों को प्रतियोगिता परिधि से बाहर रखा जा सकेगा। आपकी प्रकाशित कृतियाँ 'भारतीय बाल साहित्य शोध संस्थान' की अमूल्य धरोहर बनती है इसलिए प्रकाशित कृतियाँ प्रेषित अवश्य करें।

# प्रविष्टियाँ आमंत्रित

'देवपुत्र' द्वारा आयोजित निम्नांकित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए आपकी प्रविष्टियाँ ३१ दिसम्बर २०२६ तक सादर आमंत्रित हैं।

सभी प्रतियोगिताओं के लिए सामान्य नियम - १) एक प्रतियोगिता हेतु एक ही प्रविष्टि भेजें। २) प्रविष्टि पर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम अपना पूरा नाम, पता, पिनकोड एवं व्हाट्सएप नम्बर अवश्य लिखें। ३) प्रविष्टि हेतु रचनाएँ सुवाच्य अक्षरों में हस्तलिखित अथवा कम्प्यूटर पर टाइप की हों। ४) प्रविष्टि संपादक देवपुत्र-४०, संवाद नगर, इन्दौर-४५२००१ (म. प्र.) पर डाक द्वारा अथवा editordevputra@gmail.com पर मेल करें। ५) निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा। ६) पुस्तकों के अतिरिक्त प्रतियोगिता में प्राप्त सभी रचनाओं के प्रकाशन का अधिकार 'देवपुत्र' के पास सुरक्षित होगा। ७) कृपया रचनाओं के स्वरचित होने का प्रमाणपत्र अवश्य भेजें।

## श्री. भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२६

'देवपुत्र' के पूर्व व्यवस्थापक श्री. शांताराम शंकर भवालकर जी की पावन स्मृति में आयोजित यह स्वरचित बाल कहानी प्रतियोगिता केवल कक्षा ४ से १२ तक अध्ययनरत बालक-बालिकाओं के लिए ही है। बच्चे अपने किसी भी मनपसंद विषय पर स्वयं की लिखी हुई कोई बाल कहानी इस प्रतियोगिता में भेज सकते हैं।

पुरस्कार होंगे- प्रथम १५००/- द्वितीय ११००/- तृतीय १०००/-
प्रोत्साहन (२) ५००/- ५००/-

## मायाश्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार २०२६

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार स्व. डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की प्रेरणा से प्रायोजित यह पुरस्कार जनवरी २०२६ से दिसम्बर २०२६ के मध्य प्रकाशित हिन्दी बाल साहित्य की 'बाल कविता' विधा के लिए निश्चित किया गया है। प्रविष्टि स्वरूप उक्त अवधि में प्रकाशित बाल कविता की प्रकाशित पुस्तक ३ प्रतियों में भेजना आवश्यक है।

सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पर पुरस्कार निधि ५०००/- होगी।

## डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२६

वरेण्य बाल साहित्य सर्जक डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा स्थापित इस पुरस्कार हेतु इस वर्ष विषय 'विद्यार्थियों में नागरिक कर्त्तव्य बोध' (Civic Sense) निश्चित किया गया है। आप इस विषय पर अपनी बाल कहानी प्रविष्टि स्वरूप अवश्य भेजिए।

पुरस्कार होंगे- प्रथम १५००/- द्वितीय १२००/- तृतीय १०००/-
प्रोत्साहन (२) ५००/- ५००/-

# क्या गायब?

दूसरे चित्र में पहले की नकल करते समय बनाने से क्या रह गया है? बूझो.




दूसरे चित्र में नहीं हैं- 1. खिड़की का पर्दा 2. बंदूक का आगला हिस्सा 3. सोफे का कुशन 4. अखबार में खबरें 5. गुब्बारा फुलाते लड़के की शर्ट की धारियां 6.उसका मोजा 7. लड़की के बाल 8. फोटो वाली लड़के के जूते की एड़ी

कविता

# विजय-दशमी पर्व आया

- डॉ. विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'
-लखनऊ (उ. प्र.)

जब हुई भीषण लड़ाई।
राम ने थी विजय पाई।।
राक्षसों का वध किया था,

मार रावण को गिराया।
विजय-दशमी-पर्व आया।।

हो गये सुर-मुनि प्रफुल्लित।
थे सभी जन परम पुलकित।।
जीत की ही इस खुशी में,

है गया उत्सव मनाया।
विजय-दशमी पर्व आया।।

पर्व यह हर वर्ष आता।
जोश सबमें है जगाता।।
इस दिवस पर मिल सभी ने,

राम का गुणगान गाया।
विजय-दशमी-पर्व आया।।

रामलीला की कहानी।
लग रही सबको सुहानी।।
पुण्य जीते, पाप हारे,

यह गया सबको बताया।
विजय-दशमी-पर्व आया।।

डाक पंजीयन : एम.पी./आर.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०९/२०२६ | प्रेषण तिथि ३०/०९/२०२६ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

देवपुत्र का सदस्यता शुल्क है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता ३००/- १० वर्षीय सदस्यता ५०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १८०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी